श्रीसर्वेश्वरो जयति

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य-

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज

द्वारा प्रणीत

* श्रीपरशुरामदेवाचार्य चतुःश्लोकी *

श्रुतिपुराणतन्त्रज्ञं राधासर्वेश्वराश्रितम् ।
परशुराममाचार्यं वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ।।१।।

निम्बार्काचार्यपीठेशं श्रीमन्निम्बार्करूपिणम् ।
परशुराममाचार्यं वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ।।२।।

श्रीहरिव्यासदेवानां शिष्यं सर्वत्र पूजितम् ।
परशुराममाचार्यं वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ।।३।।

प्रत्यक्षं सिद्धिदं दिव्यं देवाचार्यं दयाकरम् ।
परशुराममाचार्यं वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ।।४।।

(श्री)परशुरामदेवांघ्रि-चतुःश्लोकी वरप्रदा।
राधासर्वेश्वराख्येन शरणान्तेन निर्मिता ।।

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
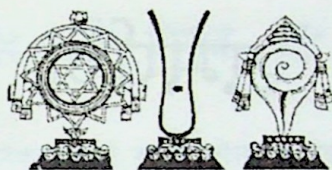
।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्रीपरशुरामदेवाचार्य (स्वामी) जी महाराज

की

चमत्कार पूर्ण घटनायें

लेखक--
पं० गोविन्ददास सन्त धर्मशास्त्री, पुराणतीर्थ

प्रकाशक--
अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ शिक्षा समिति
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़--राजस्थान

द्वितीयावृत्ति	निम्बार्काब्द ५०१७	न्यौछावर
२०००	वि० सं० २०५८	दश रुपये

✻ समर्पण ✻

हे अनन्तानन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज !
आज आपके पाटोत्सव के शुभावसर पर
आप ही की कृपा द्वारा प्रकाशित यह लघु पुष्प
आप ही के श्रीचरणों में सादर समर्पित है ।......

सेवा में लघु पुष्प यह, भाव भक्ति अनुसार ।
किया समर्पण हे गुरो !, कृपया हो स्वीकार ।।

भाद्रपद कृ० पञ्चमी
वि० सं० २०४०

समर्पक--
ब्रजमोहन नटवरगोपाल छापरवाल
प्रकाशचन्द प्रशान्त बाहेती

--✽ दो शब्द ✽--

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के संस्थापक अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य पूज्यपाद श्रीस्वामीजी श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के चमत्कार-अनुभूति-सम्बन्धित श्रीनिम्बार्क-ग्रन्थमाला का यह प्रकाशन भावुक भक्तों के लिए अनिर्वचनीय रसास्वादन का विषय होने से स्तुत्य है । **माया तेरे तीन नाम, परसा परसी परसराम** व **आख्या देखी परसराम कदै न झूंठी होय** तथा **राजा जोगी अगन जल यांकी उलटी रीति, बचता रीज्यो परसराम थोड़ी पाले प्रीति** आदि लोकोक्तियों के प्रचलन से स्वामीजी अद्यावधि देशव्यापी मारवाड़ समाज के मानस मूर्तिमान हैं । यह सद्य--प्रकाशन जब निम्बार्कीय भक्तों के माध्यम से ग्राम-ग्राम में पहुँचेगा तो निःसन्देह ही श्रीस्वामीजी के सिद्ध-व्यक्तित्व के परिचय से उनके चरणों के प्रति, पाठकों के हृदय में लोकोत्तर पूज्यभाव एवं अटूट श्रद्धा की अभिवृद्धि होगी । इसी मङ्गल--कामना से प्रकाशन की सफलता के लिए श्रीसर्वेश्वर प्रभु से अभ्यर्थना करता हुआ उक्त पुष्प के सम्पादक एवं प्रकाशक की हृदय से सराहना करता हूँ ।

--डा० रामप्रसाद शर्मा

-- भूमिका --

हंसावतार भुवि पुष्कर--पुण्य--तीर्थे
निम्बार्कतीर्थमुपयाति महत्त्वमेतत् ।
सोऽयं महान् परशुराम--तपः प्रभावः
प्राप्ता हि जाङ्गल-जना अपि वैष्णवत्त्वम् ॥
यवन-कुटिलताया अन्तकृत् स्वामिवर्य्यो
जन-हित-करणार्थं सौम्यचित्तो महात्मा ।
रस-धरणि-शताब्द्या आद्यपादे य आसीत्
तमिह परशुरामं श्रीगुरुं सम्प्रपद्ये ॥

श्रीश्यामाश्याम व्रजचन्द्र और उनके भक्तों के चरित्र विचित्र हैं। उन्हें देखकर एवं सुनकर बड़े-बड़े बुद्धिमान् भी चकित हो जाते हैं। श्रीस्वामी (परशुरामदेवाचार्यजी) महाराज की जीवनी से सम्बन्धित भी ऐसी अनेकों घटनायें हैं। उनमें एक है-बादशाह द्वारा समर्पित बहुमूल्य साल को अपने हवन कुण्ड धूनी की अग्नि के अर्पित कर देना और फिर बादशाह की मनोग्लानि को मिटाने के लिए उसी अग्नि कुण्ड से उस साल को तथा उसी प्रकार के और अनेकों सालों को निकाल-निकाल कर बाहर रख देना।

यह घटना आज से कई शताब्दी पूर्व की है, उससे पूर्ववर्ती समय की भी ऐसी अनेकों घटनायें सुनी जाती हैं। पुराणों तथा महाभारत में भी ऐसी अनेकों घटनाओं का उल्लेख है। वसिष्ठ ऋषि ने अपने पुत्र शक्ति के निधन हो जाने पर शोकातुर हो बहुत सा इंधन एकत्रित कर आग लगादी फिर प्रज्वलित अग्नि की ज्वाला में

आप जा बैठे, समस्त इंधन जलकर राख हो गया किन्तु वशिष्ठजी वैसे के वैसे बने रहे । ऐसी ही कथा प्रह्लाद की है । पुराण और महा-भारत ही नहीं विश्व के सबसे प्राचीन वैदिक साहित्य के अन्दर भी ऐसे अनेकों आख्यान हैं, जिनमें एक प्रसिद्ध आख्यान दीर्घतमा ऋषि का है:--यह प्रजापति के पुत्र अङ्गिरा ऋषि के बड़े पुत्र उचत्थ्य (पौराणिक नाम उतत्थ्य[1]) की स्त्री ममता (भार्गवी) की कुक्षि से जन्मान्ध ही उत्पन्न हुआ था । किन्तु उसने ऋग्वेद के मन्त्रों द्वारा अग्नि आदि देवों का स्तवन किया तब उसे दीखने लग गया । जब वह अत्यन्त वृद्ध हो गया था तब किसी ने उसे प्रज्वलित अग्नि कुण्ड में डाल दिया था, वहां वह अश्विनी कुमारों का स्तवन करता रहा जिससे वह बाल-बाल बच गया । इस ऋषि को पच्चीस सूक्तों का द्रष्टा माना है, वे सब ऋग्वेद प्रथम मण्डल के एक सौ चालीस से लगाकर एक सौ चौसठवें सूक्त तक उपलब्ध होते हैं । इन २४ सूक्तों की मन्त्रे संख्या २४२ दो सौ बँयालीस है ।

इस आख्यान की चर्चा करने का तात्पर्य यही है कि केवल पौराणिक ही नहीं वैदिक आख्यान भी ऐसे हैं जिनको सुनकर आश्चर्य चकित होना पड़ता है । यदि इस सम्बन्ध में गहन विचार किया जाय तो यह आश्चर्य न होकर वास्तविक सिद्ध हो सकता है । जैसा कि--**सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलानिति शान्त उपासीत** । इत्यादि श्रुतियां दृश्यमान चराचरात्मक समस्त जगत् को ब्रह्म बतलाती हैं । विवेचना करने वाले चाहे ब्रह्म का अंश बतलावें, चाहे कार्य, चाहे

---

१. उतथ्य छोटा वृहस्पति और उससे छोटा संवर्त ये अङ्गिरा के ३ पुत्र थे । भागवत् ९/२०--श्लोक ३७--३८ ।

दृश्यमान को विनश्वर अतएव मिथ्या कहकर भ्रम बतलावें किन्तु सभी को इसे ब्रह्म से सम्बन्धित मानना पड़ता है, क्योंकि सत् चित् आनन्द ब्रह्म के ये तीनों रूप इसमें उपलब्ध हैं । जल, तेज, वायु और पृथ्वी में भी इच्छा भय आदि का अस्तित्व श्रुतियां बतलाती हैं । ये सब स्वतन्त्र नहीं हैं किसी अदृश्य नियन्ता के अधीन हैं, उसके भय से ही सब तत्त्व अपने-अपने कर्त्तव्य कार्य कर रहे हैं । उसी के भय से पवन चलता रहता है।[१] उसी के भय से नियत देश काल में सूर्य उदित होकर अस्त होता रहता है । ये सब हैं भी उसी में स्थित, उनको छोड़ कर इधर उधर कहीं नहीं हो सकते ।[२]

यह लोक प्रसिद्ध है कि किसी के अधीन (शासन में रहने वाले) व्यक्ति को उस शासक और उसके विशिष्ट सम्बन्धियों का कहना मानना पड़ता है । बाल्मीकीय रामायण देखें--जब लंका में हनुमानजी के पूंछ में बहुत से टाट बोरे गूदड़े आदि लपेट कर तेल में भिगोकर आग लगा दी गई और भयंकर अग्नि प्रज्वलित हो उठा, अशोक वन में स्थित श्रीसीताजी को ज्ञात होते ही उन्होंने अग्नि देव से कहा--यदि मैंने अन्त:करण से पति सेवा की है, पतिव्रत धर्म का पूर्ण पालन किया है तो हनुमान के पूँछ के लगी हुई अग्नि शांत हो जाय ।[३] वही हुआ । उसी भयंकर आग ने समस्त लंकानगर को तो

---

१. भीषाऽस्माद्वात: पवने भीषोदेति सूर्य: ।
भीषास्मादग्निश्चन्द्रश्च मृत्युर्धावतिपञ्चम: ।

२. यतश्चोदेतिसूर्योऽस्तं यत्र च गच्छति ।
तं देवा: सर्वेऽर्पितास्तदुनाहुत्येति कश्चन ।।कठोप. २/१/९।।

३. यद्यस्ति पति शुश्रूषा यद्यस्ति चरितं तप: ।
यदि वात्वेक पत्नीत्वं शीतो भव हनूमत: ।।वा. सु. ५३/२८।।

जला डाला किन्तु हनुमानजी के पूँछ का एक बाल भी नहीं जल सका ।

अग्निदेव से तो जानकीजी ने प्रतिज्ञा पूर्वक कहा था तब उसने हनुमान के पूँछ को संतप्त नहीं किया किन्तु वायुदेव ने तो जानकीजी का भाव पहचान करके ही अपनी ऐसी अनुकूलता दिखलाई कि उस ज्वाला की लपट हनुमानजी के शरीर तक भी नहीं पहुँच पायी ।[1] ये सब दृष्टान्त युगयुगान्तर के हैं, उन युगों में तो लोहाऽभि-सन्धि का भी सर्वत्र पूर्व प्रचलन था ।[2] वह चाहे आज प्रचलित न हों पर महाकवि कालीदास के समय में भी ऐसी घटनायें घटी थी । किसी पतिव्रता का अबोध बालक अग्नि कुण्ड के समीप खेल रहा था । वह घुटनों के बल चलता-चलता उस धधकती हुई आग के कुण्ड में गिर पड़ा, पतिव्रता अपने सोये हुए श्रान्त पति को अपनी जंघा का तकिया लगाये हुए बैठी थी । यदि बालक को बचाने के लिए उठती तो पतिदेव की निद्रा भंग हो जाती । उस पतिव्रता के भाव को जानकर अग्निदेव डरा कि कहीं यह मुझे शाप न दे डाले । चन्दन के समान ठण्डा हो गया ।

---

१. ततस्तीक्ष्णार्चिरव्यग्र--प्रदक्षिण शिखोऽनलः ।
जज्वाल मृगशावाक्ष्याः संशन्निव शुभं कपेः ॥वा.रा.सु.५३/३३

२. किसी बात के सत्य असत्य का निर्णय करना होता तो उस व्यक्ति की हथेली पर अग्नि सन्तप्त अग्निरूप झकझकाता लोहे का वजनदार गोला रख दिया जाता था, वात सत्य होती तो हथेली नहीं जलती, झूँठी होती तो जल जाती थी ।

सुतं पततं प्रसमीक्ष्य पावके न बोधयामास पतिं पतिव्रता ।
पतिव्रता-शाप भयेन पीडितो हुताशनश्चन्दन पंक शीतलः ॥

वृक्ष वनस्पति आदि में तो उदासी प्रसन्नता आदि की स्थितियों का तो भारतीय विदेशीय सभी वैज्ञानिकों ने परीक्षण कर ही लिया है । वेद उपनिषदों में जो तेज जल पृथ्वी (अन्न) आदि में बहुभावनात्मक ईक्षण (संकल्प) की चर्चा मिलती है, वह भी शनैः शनैः आधुनिक वैज्ञानिकों के भी गले उतरने लगी है, अतएव ये भी इस बात पर जोर दे रहे हैं कि जिस प्रकार जलीय शरीर वाले जलस्थ कीटाणु सूक्ष्म रूप से जल में स्थित रहते हैं उसी प्रकार तैजस शरीर वाले कीटाणु भी तेज में बने रहते हैं, वे विनष्ट नहीं होते । यह भी निश्चित ही है कि सूक्ष्म से ही स्थूल बनता है । जैसा कि शुक्र और रज की सूक्ष्म सी बूँद से स्थूल आकार (शरीर) बन जाना सर्वानुभूति है । महाभारत में द्रौपदी और धृष्टद्युम्न का आविर्भाव अग्निकुण्ड की प्रज्वलित ज्वाला से होना लिखा है ।

इस सम्बन्ध में यह तर्क वितर्क उठाया जा सकता है कि तेज आदि में सजातीय वस्तु ही सुरक्षित रह सकती है, विजातीय नहीं । किन्तु इसके विपरीत भी देखा जाता है--नदी आदि जलों में विजातीय हड्डियां (पार्थिव) आदि पदार्थ और पर्वत आदि में सुवर्ण आदि तैजस पदार्थ अपरिमित समय (युगयुगान्तर) तक बने ही रहते हैं । उसी प्रकार तेज में भी विजातीय पदार्थ रह सकते हैं । अस्तु ।

आज भी यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-मणि आदि के प्रयोगों द्वारा स्तम्भन (अग्नि आदि की शक्ति का प्रतिबन्धन) किया जा सकता है, किन्तु ऐसे प्रयोक्ताओं की संख्या प्रतिदिन कम होती जा रही है । हमें

यह ध्यान रखना चाहिए कि अग्नि की गणना वसु नामक देवों में की जाती है, अतएव इसकी आराधना से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। वेदों में भी अग्नि सूक्त मिलते हैं, अग्निष्ठोमादि यागों का भी सदा से प्रयोग होता आ रहा है। उनसे यथेष्ट फल प्राप्ति आज भी होती है। होना चाहिए विश्वास और सावधानी पूर्वक अनुष्ठान।

योग दर्शनकार का कहना है कि जिस साधक ने कभी भी हिंसा न की हो, किसी भी प्राणी को मन वचन कर्म से दुःखित न किया हो, उसकी सन्निधि (सन्निकटता) में विद्वेषी और घातकों में भी पारस्परिक वैर छूट जाता है।[1] कहावत है ऋषियों के आश्रमों में सिंह और बकरी एक घाट पर पानी पीते रहते हैं।

इसी प्रकार सत्य भाषण की प्रतिष्ठा हो जाने पर उस साधक के मुख से जो कुछ भी निकलेगा वह भी सत्य ही निकलेगा, कदाचित् कभी कोई असत्य वचन निकल भी गया तो वह भी सत्य ही हो जाएगा। यह योगी यति मुक्त पुरुष सच्चे सन्तों के सम्बन्ध में निर्विवाद मान्यता चली आ रही है। श्रीस्वामी (परशुरामदेवाचार्य) जी महाराज भी उन्हीं महापुरुषों में से एक थे। वे थे **मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्** उनके वचन कर्म और संकल्प सब कुछ सत्य थे, चाहे धूनी (अग्नि कुण्ड) से उनके चिपिया में आग या भस्म ही क्यों न आया हो किन्तु उनका संकल्प दुशाले का था, वही बन गया।

इस प्रकार के अनेकों चमत्कार हैं श्रीस्वामीजी के। हमने यहां केवल एक पर ही ऊहापोह किया है। लेखक महोदय ने अन्याऽन्य

---

१. अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैर त्यागः। यो० सू० २/१५

चमत्कारों की भी चर्चा जीवनी में की है । हमने तो **एक ही साधे सब सधै** को पर्याप्त मान लिया है ।

हमने लगभग दो सौ वर्ष पूर्व की राजा-महाराजाओं एवं राजपरिकर के सज्ञनों की चिठ्ठियां पढी हैं जिनमें श्रीस्वामीजी के धूने की विभूति और नालाजी के जल को भिजवाने का अत्यन्त आग्रह किया गया है । साधारण से साधारण व्यक्ति को लेकर बड़े से बड़े नरेशों ने भी श्रीस्वामीजी महाराज की आराधना से यथेष्ट फल प्राप्त किया, और जागीरियां भेंट की, व भीषण जङ्गल श्रीस्वामीजी के प्रभाव से ही एक स्टेट बन बैठा । उनके चमत्कारों के इस महान् परिणाम का सभी को यह प्रत्यक्ष हो रहा है ।

भक्तिमती सरजूबाई छापरवाल रिड़ की स्मृति में उनके सुपुत्र श्रीब्रजमोहनजी छापरवाल के द्वारा श्रीस्वामीजी महाराज की संक्षिप्त जीवनी का प्रकाशन हो रहा है अतः दिवंगत उस देवी (बाई) की जीवनी पर भी थोड़ा प्रकाश डाल देना हम परम आवश्यक समझते हैं ।

वि० सं० २००३ के कार्तिक मेले के अवसर पर पुष्कर में श्रीसर्वेश्वर संघ का अधिवेशन हो रहा था, श्रीमद्भागवत सप्ताह पारा-यण के व्यासासन ग्रहण करने के लिए हमसे अनुरोध किया गया तो हमें स्वीकार करना पड़ा । प्रधान श्रोता (यजमान) थी सोनीबाई शर्मा (सलेमाबाद), उसका भी पीहर कड़ेल था अतः सरजूबाई से इनकी घनिष्ठाता थी । वह बीमार थी, अजमेर में इलाज करवा रही थी, सोनी बाई के अनुरोध से भागवत कथा श्रवण करने के लिए पुष्कर आगई और वहां (श्रीपरशुरामद्वारे में) ही सप्ताह पर्यन्त ठहरने का निश्चय हो गया । वर्तमान श्री श्रीजी महाराज श्रीवृन्दावन-

धाम में विराजते थे और सरजूबाई को वैष्णवी दीक्षा लेना आवश्यक था अतः हमसे ही कार्तिक शुक्ला अष्टमी वि० सं० २००३ को प्रातः पञ्चसंस्कार पूर्वक मन्त्रोपदेश ले लिया। अधिवेशन सानन्द सुसम्पन्न हो गया।

सरजूबाई जिस प्रकार शनैः शनैः स्वस्थ होने लगी उसी प्रकार श्रीस्वामीजी महाराज एवं सम्प्रदाय सेवा में अभिरुचि बढने लगी। श्रीवृन्दावन की यात्रा भी की। तीन वर्ष व्यतीत हो गये। रिड़ में कुछ सज्जनों की इच्छा हुई कि अपने यहां श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायण यज्ञ करवाया जाय। तीन सौ रुपयों का बजट बनाकर चन्दा करना शुरु किया। सरजूबाई ने कहा अगर बाबाजी (गुरुजी अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी) पधार कर सप्ताह करें तो तीन सौ रुपये मैं अकेली ही खर्च कर दूँ। चन्दा करने वाले प्रसन्न हो गये। आचार्यपीठ (सलेमाबाद) पहुँचे तो अधिकारी श्रीनरहरिदासजी ने उनसे कहा ऐसे तो वे नहीं आयेंगे वृन्दावन पहुँचकर ही आग्रह करना पड़ेगा। श्रीअमरचन्दजी छापरवाल ने वृन्दावन पहुँच कर सभी स्थिति प्रकट की। हमें उनका आग्रह मानना पड़ा। आषाढ मास का ही मुहूर्त निश्चित हो गया। सप्ताह का कार्यक्रम आरम्भ हो गया। दूसरे तीसरे दिन ही किसी प्रसङ्गवश सरजूबाई ने पूछा पूर्णाहुति के अवसर पर श्री श्रीजी महाराज का पादार्पण हो जायेगा क्या? हमने कहा वृन्दावन से तो महाराजश्री पधार आये हैं। यहां से आचार्यपीठ केवल सोलह मील ही है। प्रार्थना की जाय। प्रार्थना स्वीकृत हो गई, आचार्यचरणों का पादार्पण हुआ। बड़े समारोह पूर्वक स्वागत और चरणार्चन हुआ। तीन सौ रुपये की जगह तीन हजार रुपये से भी अधिक ही व्यय हुआ।

यद्यपि रिड़ के छापरवाल, राठी, बाल्दी, काबरा आदि माहेश्वरी और अग्रवाल तथा गौड़, दाधीच, खण्डेलवाल सभी विप्र-समाज और क्षत्रिय सभी श्री श्रीजी महाराज के दीक्षित अतएव वैष्णव थे तथापि सरजूबाई के पीहर (कड़ेल) वाले प्रायः आर्यसमाज से प्रभावित थे किन्तु सरजूबाई के सम्पर्क से उनका पितृकुल (बाहेती परिवार) ही क्या प्रायः पूरी बस्ती ही वैष्णव बन गई । रिड़ और कड़ेल दोनों नगरों में धन-जन की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि हो रही है । यह कहना अनुचित न होगा कि श्रीसर्वेश्वर प्रभु के प्रति सरजूबाई का हार्दिक भक्ति-भाव ही इस व्यापक उन्नति का अभिस्रोत माना जाना चाहिए । सरजूबाई ने एक ही बार नहीं फिर दूसरी बार अपने यहां श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायण करवाया और फिर श्रीरतनलालजी बालदी के अनुरोध से तीसरी बार भी हमें व्यासासन फिर ग्रहण करना पड़ा ।

आचार्यपीठ सलेमाबाद, वृन्दावन, अजमेर, पुष्कर, किशनगढ आदि स्थलों की सरजूबाई निरन्तर चर्चा करती रहती थी । भक्तवत्सल प्रभु अपने जन का प्रण सदा से पूर्ण करते आये हैं । सरजूबाई का भी संकल्प पूर्ण किया आज उसके सभी अभीष्ट स्थलों की उन्नति ही उन्नति दिखाई दे रही है ।

रिड़ के छापरवालों की कई परम्परायें इस वंश में है । उनमें सरजूबाई वाली परम्परा यहां उल्लेखनीय है । प्रयागदासजी के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी के रामबक्सजी, हरिबक्सजी, रामचन्द्रजी, चुन्नीलालजी और बद्रीनारायणजी ये पांच पुत्र हुए, उनमें तृतीय

रामचन्द्रजी के पुत्र शिवनारायणजी हुए और चौथे चुन्नीलालजी के वि० सं० १९७० के लगभग मांगीलालजी नाम वाले एक संस्कारी भक्त उत्पन्न हुए। उनके साथ कड़ेल ग्राम के सेठ श्रीलक्ष्मीनारायणजी बाहेती की सुता सरजूबाई का वि० सं० १९९० के लगभग पाणिग्रहण संस्कार (विवाह) हुआ। चुन्नीलालजी के एक पुत्री किशनीबाई हुई, जिसका विवाह संस्कार डांगावास निवासी गुलाबचन्द्रजी भूतड़ा से हुआ था। मांगीलालजी के सरजूबाई की कुक्षि से एक पुत्र हुआ, जिनका नाम ब्रजमोहन है। ब्रजमोहनजी की पत्नी बसन्ती देवी के नटवरगोपाल पुत्र और कृष्णा, सरला दो पुत्रियां हैं।

इधर सरजूबाई के पितृ कुल कड़ेल में गंगाविष्णुजी के लक्ष्मीनारायणजी हुए उनके सतीसाध्वी धर्मपत्नी सुगनादेवी की कुक्षि से विहारीलालजी, रामरतनजी, रामकरणजी, बंकटलालजी ये चार पुत्र और सरजूबाई एवं केसरदेवी दो सुताएँ हुई जिनका क्रम से मांगी-लालजी छापरवाल रिड़ और घनश्यामदासजी साबू कुचामन सिटी से पाणिग्रहण संस्कार हुआ।

लक्ष्मीनारायणजी के पुत्रों में बड़े बिहारीलालजी के रमेशचन्दजी हैं। रामकरणजी के पुत्र प्रकाशजी हैं उनके प्रसांत और कुमारी प्रीति हैं। बंकटलालजी के कमलकिशोरजी, नवलकिशोरजी है। सुता! सरजूदेवी के पुत्र (श्रीस्वामीजी की महिमा वाली इस पुस्तक के प्रकाशक) श्रीब्रजमोहनजी छापरवाल हैं, और इनके नटवरगोपाल पुत्र और कृष्णा, सरला ये दो सुतायें हैं, नटवर-गोपाल के पुत्र अभिषेक हैं। केशरदेवी के गोविन्दगोपालजी और

वेणीगोपालजी पुत्र हैं और विमला, अरुणा पुत्रियां हैं । ये सभी श्रीस्वामीजी (श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी) महाराज की आराधना से प्रकटित हैं ऐसा छापरवाल, बाहेती और साबू इन सभी परिवार के सज्जनों का विश्वास है । विश्वासानुसार सभी सज्जन आचार्यपीठ की सेवा में तन, मन, से संलग्न रहते हैं ।

हमने यहां केवल---

भक्ति भक्त भगवन्त गुरु चतुर नाम वपु एक ।

इस दृष्टि से ही भक्त परिकर का संक्षिप्त परिचय उद्धृत कर दिया है ।

--अ० व्रजवल्लभशरण

वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ, वृन्दावन

प्राक्कथन

य: संजहार पदकंजमधुव्रतानां
कामादिहैहय कुलं निजबोधबाणैः ।
वन्दे च तं परशुराममहं द्वितीयं
विद्याविरागपरमं कृपयावतीर्णम् ॥
(आचार्य चरित्र)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री मत्परशुरामदेवाचार्यजी (श्रीस्वामीजी महाराज) के कई एक दिव्य चमत्कारों से परम प्रभावित हो भक्तिमती श्रीसरजूबाई छापरवाल रिड़-कुचामन जि. नागौर की भगवान् श्रीसर्वेश्वर, श्रीराधामाधव प्रभु एवं वर्तमान आचार्यश्री तथा अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा संचालित पारमार्थिक संस्थाओं की सेवाओं को देख पीठ के प्रति आपकी अटल श्रद्धा हो गई थी आपने अपनी सत्प्रेरणा से अपने सम्बन्धित तथा अन्य कई एक परिवारों को इस ओर अग्रसर किया जिनके द्वारा आज पीठस्थ पारमार्थिक संस्थाओं की पर्याप्त रूप से समय-समय पर सेवा हो रही है । अतः आपकी यह पारमार्थिक दिव्य सत्प्रेरणा परम सराहनीय एवं अनुकरणीय है ।

आपके भ्राता भक्तवर श्रीरामकरणजी, श्रीबंकटलालजी बाहेती तथा सुपुत्र श्रीब्रजमोहनजी छापरवाल ने आपकी पुण्य स्मृति में प्रकाशित इस प्रस्तुत पुष्प के प्रकाशन में जो आर्थिक सहयोग प्रदान किया है, वह सत्प्रेरणात्मक है ।

भक्तिमती श्रीसरजूबाई को श्रीरासलीला दर्शन का बड़ा भारी प्रेम था । ऐसे अवसर पर वह प्रथम आकर अपना स्थान ग्रहण कर लेती । अत: जाकी रही भावना जैसी के अनुसार वे तो श्रीयुगलकिशोर श्यामाश्याम नित्य-लीला निकुञ्ज में श्री सहचरी वृन्द में आनन्द ले रही होंगी इसमें कोई सन्देह नहीं । उनकी सत्प्रेरणा से ही उनसे सम्बन्धित परिवार या अन्य कई भाई बंधु या माता बहिनें इस ओर भक्ति भाव में आकृष्ट हुए । भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु उनके भक्तिभाव, व्यवसाय क्षेत्र आदि सर्व विध मांगलिक कार्यों में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि करें, यही हमारी मङ्गल कामना है ।

--सम्पादक

आविर्भाव--

आपका आविर्भाव राजस्थान प्रान्त जयपुर राज्यान्तर्गत खण्डेला रियासत में **ठिकरिया** नामक ग्राम (जो कि रींगस जंक्शन से सीकर की ओर चलने वाली रेल्वे स्टेशन पर स्थित है-वर्तमान में यह जिला सीकर में है) के निवासी परम पावन गौड़ ब्राह्मण वंश में हुआ था । किसी ने आपश्री का आविर्भाव नारनोल (हरियाणा) में उल्लेख किया है जो अनुसन्धान और प्रमाणिकता की अपेक्षा रखता है । आपके स्वरचित परम विशाल ग्रन्थ **श्रीपरशुरामसागर** में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक पूरी वाणी में बहुत से शब्द राजस्थानी (मारवाड़ी) भाषा में हैं जिससे स्पष्ट होता है कि उपर्युक्त ठिकरिया ग्राम ही आपका जन्म स्थान युक्तियुक्त प्रतीत होता है ।

डॉ० श्रीरामप्रसाद शर्मा एम. ए. पी. एच्. डी. प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय किशनगढ-राजस्थान ने भी श्रीपरशुरामसागर पर शोध करके पी. एच. डी. की डिग्री प्राप्त की है, उन्होंने भी अपने शोध ग्रन्थ में आपका जन्म स्थान ठिकरिया ही लिखा है । प्रमाणार्थ अन्तःसाक्ष्य रूप में निम्नांकित दोहा आपने परशुराम सागर से उद्धृत किया है--

खण्डेला की ठीकरी अणपूछी पहिचाण ।
भजन उजागर परसराम प्रगट प्रेमते जाणि ।।

मन्त्रोपदेश--

प्रसाद चिह्नानि पुरः फलानि अथवा होनहार विरवान के होत चिकने पात के अनुसार बाल्यावस्था से ही आपका मन सांसारिक मोह जाल से हट कर भगवद्भक्ति, भगवद्दर्शन, महापुरुषों की संगति तथा भजन कीर्तन में ही निरन्तर लगा रहता था । पूर्व जन्म के प्रबल संस्कारों के फलस्वरूप श्रीकृष्ण जन्मभूमि मथुरा में पहुँच कर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य रसिकराजराजेश्वर महावाणीकार श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज, नारदटीला मथुरा से पञ्चसंस्कार पूर्वक अथर्ववेदीय श्रीगोपालतापिन्युपनिषद में परिवर्णित पञ्चपदी श्रीगोपाल मन्त्रराज की विधि पूर्वक वैष्णवी दीक्षा संप्राप्त की । तदनन्तर मथुरा में ही श्रीगुरुचरण सन्निधि में निवास करते हुए श्रीगुरु सेवा एवं भगवत-भागवत सेवा में आप अधिकाधिक भाग लेने लगे । यदा कदा जब श्रीगुरुदेव धर्म प्रचारार्थ बाहर भ्रमण करते तो आप उनके साथ ही सेवा में रहते थे । इस प्रकार श्रीगुरुदेव के साथ बाहर भ्रमण करने से देश-काल की परिस्थितियों से भी आपको पूर्ण परिचय हो गया था, फिर गुरु-सेवा, सन्त-सेवा तथा सतत हरि भजन के कारण और अपनी त्याग तपस्या से आपका दिव्य तपोबल उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया । भजन के प्रभाव से कई एक वैष्णवी सिद्धियां भी आपको हस्तगत हो गई थी ।

श्रीनिम्बार्कतीर्थ पर संकट--

एक दिन की बात है कि श्रीसर्वेश्वर प्रभु की शृङ्गार आरती के पश्चात् प्रतिदिन की भाँति श्रीगुरुदेव (आचार्यश्री) स्वरचित श्रीमहावाणीजी का सन्तों के मध्य दिव्योपदेश कर रहे थे, इतने ही में बाहर से कुछ भक्तजनों द्वारा-बचाओं बचाओं धर्म की रक्षा करो-रक्षा करो यह आर्तभरी पुकार श्रीगुरुदेव के कानों में पड़ी । आपने तुरन्त कथा को विश्राम देकर एक सन्त द्वारा उन सभी भक्तों को भीतर बुलवाया और पूछा कि आप लोग कहाँ से आरहे हो और क्या संकट है ।

महाराज ! हम लोग राजस्थान से आ रहे हैं । श्रीपुष्कर क्षेत्रान्तर्गत किशनगढ और रूपनगढ के मध्य साभ्रमती नदी तटवर्ती श्रीनिम्बार्कतीर्थ हंसावतार स्थल श्रीपुष्कर जिसके निकटवर्ती यह तीर्थ जहाँ आपश्री तपःसाधना निरत हैं उससे कुछ ही दूरी पर दक्षिण की ओर एक तांत्रिक सिद्ध यवन फकीर मस्तिंगशाह ने अपना स्थान (तकिया) बना लिया है, वह तीर्थ-यात्रार्थ आने वाले यात्रियों को जो कि समस्त तीर्थ यात्रा कर श्रीनिम्बार्कतीर्थ में स्नान करते हुए श्रीपुष्करराज में जाकर स्नान करते हैं, उन्हें बहुत विविध रूप से यातना देता है-- वैष्णवों के तिलक मिटवा देना, कंठी तुड़वा देना आदि की चेष्टा करता है । अर्थात् धर्मान्तरण पर उतारू हो रहा है । उसका आतंक दिनोंदिन बढ रहा है । गुरुदेव ! इसकी रोक थाम यदि शीघ्र ही नहीं की गई तो आपका वह अति प्राचीन

तीर्थ-स्थल नष्ट-भ्रष्ट होकर हस्तांरित हो जायगा ।

यह प्रसंग सुन कर आचार्यश्री को बड़ा ही दुःख हुआ। वे तत्काल ही अपने सामने बैठे हुए श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी से संकेत करते हुए बोले कि यह कार्य श्रीसर्वेश्वर कृपा से आप ही सुसम्पन्न कर सकते हैं, कारण कि आपको भगवत्कृपा से वैष्णवी सिद्धियां प्राप्त हैं । जिस प्रकार कांटा कांटे से ही निकल जाता है, ठीक उसी प्रकार वैष्णवी सिद्धियों द्वारा पैशाचिक सिद्धियां सहज ही में निरस्त हो जायेंगी । इस प्रकार बिना किसी अन्य प्रयास के यह कार्य सहज ही बन जायगा ।

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी **आज्ञा गुरूणां ह्यविलंघनीया** इस सिद्धान्तानुसार श्रीगुरुदेव की आज्ञा को शिरोधार्य कर कतिपय सन्तों को साथ ले श्रीपुष्करराज पहुँचे । तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज में स्नान कर परिक्रमा में श्रीब्रह्मा घाट के समीप जहां वर्तमान में श्रीपरशुरामद्वारा है इसी स्थान पर, जहां कि केवल घाट मात्र ही था निवास किया । दूसरे ही दिन प्रातः स्नान, सेवा-पूजा, देव-दर्शन, श्रीपुष्कर परिक्रमा एवं महाप्रसाद लेने के पश्चात् जिस कार्य को करने आये हैं सर्व प्रथम श्रीनिम्बार्कतीर्थ चल कर उसी कार्य को करना है, ऐसा विचार कर सन्तों के साथ ही श्रीनिम्बार्कतीर्थ आये और वहां से कुछ दूर पश्चिम की ओर जहां वर्तमान श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में श्रीस्वामीजी महाराज की तपःस्थली में जहां श्रीस्वामीजी महाराज का हवनकुण्ड (धूनी) है, इस स्थान पर एक पीलू

(जाल) का वृक्ष था, बस उसी के नीचे अपना आसन लगा लिया । यहीं से प्रतिदिन स्नानार्थ श्रीपुष्करराज जाना आना होता था । इस स्थान से पुष्करराज सीधा १२ कोश पड़ता है जो कि एक योगिराज के लिये जाने आने में आश्चर्य की बात नहीं ।

अब यहीं से श्रीस्वामीजी महाराज की चमत्कारपूर्ण घटनाओं का श्रीगणेश प्रारम्भ होता है

(१) मस्तिङ्गशाह--

एक दिन मस्तिंगशाह ने सुना कि यहां पर कोई एक संत आगया है और वह एक पेड़ के नीचे आसन लगाये हुए बैठा है, तो वह तत्काल ही अपना चीमटा लेकर उठा । उसे अपनी सिद्धिबल पर अभिमान था । उसने ईर्षा वश आकर टेढी नजर से देखते हुए अपने सिद्धिबल पर श्रीस्वामीजी एवं साथ के सन्तों को मूर्छित करना चाहा, किन्तु कई बार प्रयोग करने पर भी उसके सब प्रयत्न विफल हो गये । यह तो कहावत प्रसिद्ध ही है कि **सेर को सवा सेर** मिल ही जाता है । अभिमान भी भगवान् को नहीं सुहाता, वह भी किसी के द्वारा नष्ट करवा ही देते हैं । अस्तु उस तान्त्रिक प्रसिद्ध यवन फकीर मस्तिंगशाह के पास तीन पैशाचिक सिद्धियां थी जिनके बल पर उसे

श्रीपरशुरामदेवाचार्य जी महाराज अपने दिव्य प्रभाव से यवन फकीर मस्तिङ्गशाह को उसके दुष्कृत्यों पर परास्त (स्तम्भित) करते हुए

अभिमान था । ज्योंही वह महाराज के पास पहुँचा कि वहीं स्तब्ध (खड़ा का खड़ा ही) रह गया, आगे नहीं बढ पाया । अर्थात् श्रीस्वामीजी महाराज ने अपने दिव्य तपोतेज के बल पर उन पैशाचिक सिद्धियों को हरण कर नष्ट कर दिया । जब उसने सभी प्रकार से अपने को सर्वथा असहाय एवं असमर्थ पाया तो करुण क्रन्दन करता हुआ क्षमा-प्रार्थना करने लगा । बहुत अनुनय विनय करने के अनन्तर श्रीपरशुरामदेवजी ने उसे क्षमा प्रदान करते हुये कहा कि आज से अब किसी के साथ ऐसा अभद्र व्यवहार करके किसी जीव को न सताना और अब यहां से तुम अन्यत्र चले जावो । वह भी श्रीस्वामीजी की आज्ञा शिरोधार्य कर वहां से चला गया ।

अन्तिम समय में फिर उसने वहीं आकर अपने शरीर का आश्रम से कुछ ही दूर पर अन्त किया, जिसकी कब्र आज भी विद्यमान है जो कि श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) से कुछ दूर पर दक्षिण की ओर है । यह यवन पीछे परम भक्त हो गया था ।

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने इस प्रकार श्रीनिम्बार्कतीर्थ स्थल को निष्कंटक बना कर इस रूखे मरु-स्थल प्रदेश में वैष्णव धर्म का प्रचार करते हुए कुछ दिवस पर्यन्त निवास कर पुनः श्रीमथुरा की ओर प्रस्थान किया । श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने इनके कार्य कौशल तथा सिद्धि बल के प्रभाव को साथ के सन्तों द्वारा सुन कर परम

प्रसन्नता प्रकट की ।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने अपनी इहलीला संवरण करने के कुछ दिन पूर्व ही अपने समस्त शिष्यों को एकत्रित कर अपनी हार्दिक भावना इस प्रकार प्रकट की---

एकदा श्रीहरिव्यासदेवाचार्यः प्रसन्नधीः ।
शिष्येषु प्रवरान्मत्वा द्वादशानाह धर्मवित् ॥
श्रीमत्सर्वेश्वरं देवमस्माकं कुलदैवतम् ।
नारदादि सुरर्षिभिः संसेव्यो निजदेशिकैः ॥
पूर्वाचार्योक्तरीत्या वै तत्सेवां कः करिष्यति ।
एकाग्रमनसा सर्वे ब्रुयूर्धर्मपरायणाः ॥
श्रुत्वाचार्यवचः सर्वे तुष्णी भूता व्यचारयन् ।
ऊचुस्तेऽयं कृपापात्रः सेवामेष करिष्यति ॥
श्रुत्वाचार्यस्तमाहूय श्रीमत्सर्वेश्वरं हरिम् ।
अर्पयामास शिरसि परशुरामाभिधस्य वै ॥

(आचार्य चरित्र विश्राम १४ श्लोक ५ से ९)

एक समय धर्म के तत्त्व को भली प्रकार जानने वाले एवं प्रसन्न मन वाले श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने अपने शिष्य समुदाय में श्रेष्ठ बारह शिष्यों को, जिन्हें कि वे सुयोग्य समझते थे अपने समीप बुलाकर कहने लगे ।

देवर्षि नारद मुनि को आदि लेकर जितने भी श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्य हुए हैं उन सबों के सेवित और
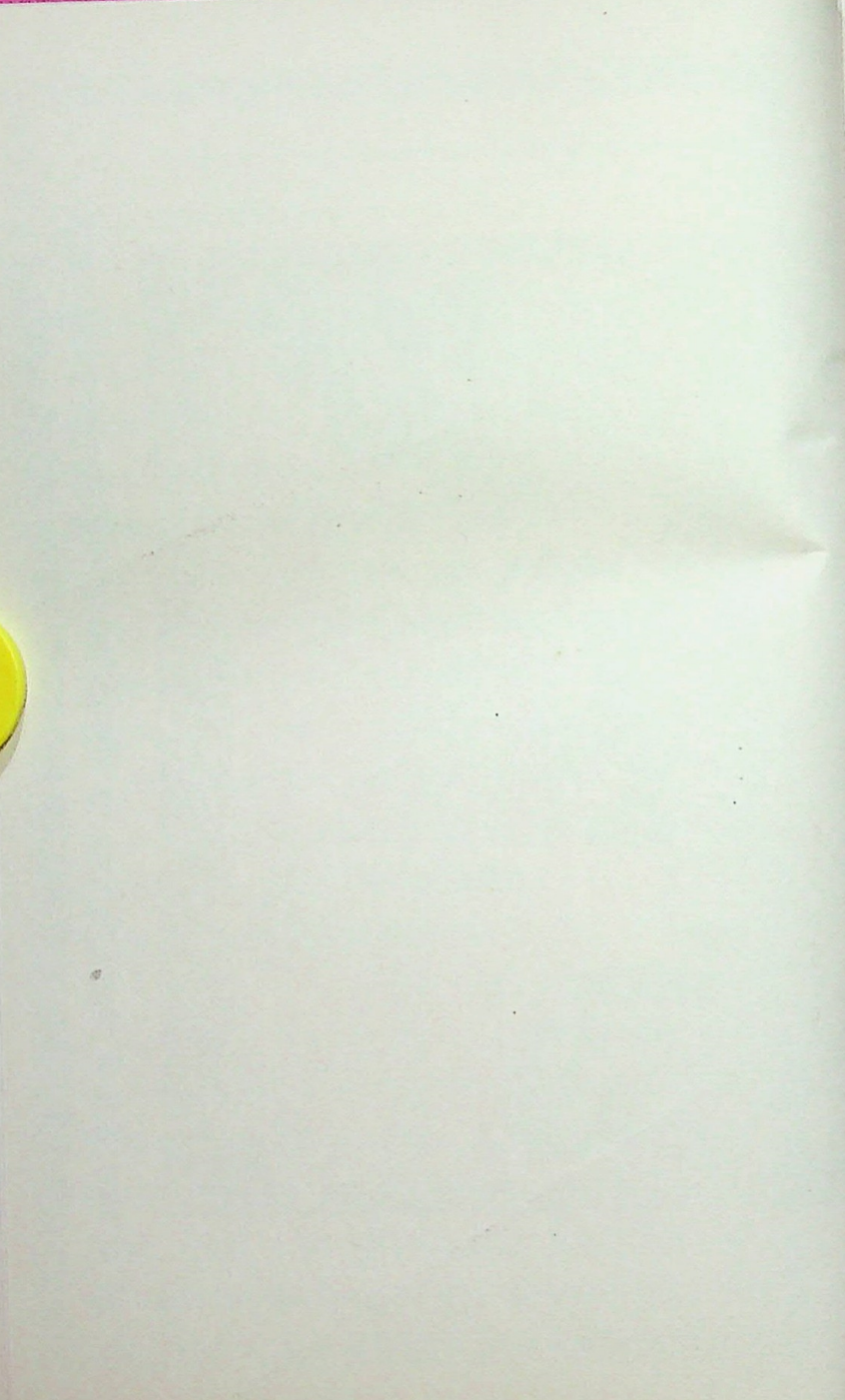
हमारे कुलदेव स्वरूप जो ये श्रीसर्वेश्वर भगवान् हैं--

उनकी सेवा श्रीनारदादि पूर्वाचार्यों के नियमानुसार कौन करेगा ? इस प्रकार श्रीगुरुदेव की आज्ञा सुनकर धार्मिक भावना से ओत-प्रोत उपर्युक्त सभी वे शिष्य गण स्वतन्त्रता पूर्वक अपने-अपने विचार महाराजश्री से निवेदन करने लगे ।

प्रथम तो वे आचार्यश्री का महत्वपूर्ण प्रश्न सुनकर सब चुप हो गये । फिर विचार कर कहने लगे कि भगवन् ये श्रीपरशुरामदेवजी आपके विशेष कृपापात्र परम मेधावी प्रबल सिद्धिसम्पन्न एवं पूर्ण समर्थ हैं । अतः ये ही श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा कर सकेंगे ।

इस प्रकार सर्व सम्मत शिष्यों की वाणी सुनकर और श्रीपरशुरामदेवजी को बुलाकर आचार्यश्री ने श्रीसर्वेश्वर भगवान् की सेवा का भार आपको ही सौंप दिया ।

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की इहलीला संवरण के पश्चात् श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ही आचार्य पदासीन हुये और श्रीगुरुदेव की पूर्व संकथित आज्ञानुसार कि मरुस्थल प्रदेश में जाकर वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार करना इसी पूर्व निर्दिष्ट श्रीमद्गुरुवर्य की आज्ञानुसार आप कतिपय सन्तों को साथ लेकर श्रीनिम्बार्कतीर्थ में उसी स्थान पर पीलु (जाल) वृक्ष के नीचे आसन लगा धूनी (हवन कुण्ड) बना भगवदाराधना में संलग्न हो गये ।

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा तो आपश्री की निजी सेवा थी ही और उसके अतिरिक्त श्रीगोकुलचन्द्रमाजी के श्रीविग्रह

की संस्थापना कर प्रति दिन पञ्चकालीन सेवा तथा स्तुति संकीर्तनादि प्रारम्भ हो गये ।

वर्तमान में भगवान् श्रीराधामाधवजी के बांई ओर मन्दिर में जहां श्रीसर्वेश्वर भगवान् विराजते हैं वहीं पर रजत सिंहासन में श्रीलड्डूगोपालजी के स्वरूप में विराजमान हैं वहीं अति प्राचीन श्रीगोकुलचन्द्रमाजी का श्रीविग्रह है ।

(२) दिल्लीपति बादशाह शेरशाहसूरि का आगमन-- श्रीस्वामीजी महाराज द्वारा पुत्र प्राप्ति का वरदान

राजस्थान में श्रीस्वामीजी महाराज के चरणाश्रित होने वाले कृपापात्र शिष्यों में जोधपुर राज्यान्तर्गत खेड़जला ग्राम के सरदार ठाकुर श्रीसियोजी भाटी सर्वप्रथम शिष्य थे जो कि दिल्ली बादशाह की सेना में उच्च पद पर नियुक्त थे ।

एक बार बादशाह शेरशाहसूरि बड़े लवाजमें के साथ ख्वाजा साहब के दर्शनार्थ अजमेर आये हुये थे । वहां से वापिस लौटते समय श्रीसियोजी भाटी के संकेतानुसार कि सरकार यहां से कुछ दूरी पर हमारे श्रीगुरुदेव विराजते हैं, जो कि बड़े ही सिद्ध सन्त हैं वहां दर्शन करने पर मानव की मुराद (मनोवांछा) पूरी होती है । बादशाह ने सहर्ष स्वीकृति देदी तदनुकूल सब प्रबन्ध हो गया । आगे आकर श्रीभाटीजी ने आचार्यश्री से निवेदन किया कि भगवन् ! दिल्ली पति बादशाह आपके दर्शनार्थ आरहे हैं । आचार्यश्री ने स्वीकृति प्रदान की ।

(१) श्री स्वामी जी महाराज से पुत्र कामनार्थ आशीर्वाद प्राप्ति हेतु सामने बैठे बादशाह शेरशाह सूरी (दिल्ली) एवं खड़े हुए ठा.सा. खेजड़ला (२) बादशाह द्वारा अर्पित दुशाला को धूनी में अर्पित करने पर बादशाह की उदासीनता देखकर अनेक दुशाले धूनी में से निकाल कर सामने रखते हुए श्रीपरशुरामदेवाचार्य जी (श्री स्वामी जी) महाराज।

परमाराध्य आचार्यप्रवर श्रीपरशुरामदेवाचार्य जी (श्री स्वामीजी) महाराज निज शरणापन्न शिष्य श्रीतत्त्ववेत्ताचार्य जी को भक्तिरसामृत का उपदेश करते हुए

बना रहे सो मैं ऐसा चाहता हूँ कि श्रीनिम्बार्कतीर्थ (श्रीपरशु-रामपुरी) के पास जो बसावट हो उसका नाम सलीमाबाद रक्खा जाय । इस प्रार्थना एवं उक्त पट्टे को आचार्यश्री ने स्वीकार किया तब से श्रीनिम्बार्कतीर्थ एवं श्रीपरशुरामपुरी ये नाम तो प्राचीन हैं ही, किन्तु जो बसावट हुई उसका नाम **सलीमाबाद** पड़ा । बादशाह द्वारा किये गये गोचारण हेतु उस ६ हजार बीघा वाले जमीन के पट्टे को अंग्रेजी शासन में भी मान्यता दी गई, किन्तु देश के स्वतन्त्र होते ही स्वतन्त्र भारत सरकार ने उस जमीन को वन विभाग में ले लिया ।

(३) एक ब्राह्मण बालक पर कृपा--

एक ब्राह्मण बालक जिसका नाम टीकम, जन्म जोधपुर राज्यान्तर्गत जयतारण परगना में **फूलमाल** नामक ग्राम में एक दाधीच ब्राह्मण वंश में हुआ था, यह परिवार कृषि कार्यरत होने से धन सम्पन्न परिवार था । इस बालक के बाल्यकाल में ही माता--पिता का स्वर्गवास हो चुका था । भाई--भोजाई कुटुम्ब परिवार बहुत लम्बा-चौड़ा था । एक दिन यह बालक भी खेती पर भाईयों के साथ पहुँच गया । खेती करने वाले क्यारियों में पानी दे रहे थे । यह देखकर यह बालक भी पानी देने लगा केवल एक क्यारी में जिसमें बहुत सी चींटियाँ थी, नहीं दिया । इस पर भोजाई ने पूछा--इसमें पानी क्यों नहीं दिया । इसमें

कैसे देता, यह सारे जीव मर जाते । यह उत्तर सुनकर भोजाई बोली तब तो वैराग्य क्यों नहीं लेलिया एक स्थान पर बैठकर भजन करना था । भौजाई की यह बात रामबाण का काम कर गई । पूर्व जन्म के संस्कार तो प्रबल थे ही, भोजाई के निमित्त ने और सहयोग प्रदान कर दिया । यह उसी समय घर बार एवं संसार का मोह सर्वदा के लिये त्याग कर चल दिया । कुटुम्ब परिवार वालों ने बहुत समझाया पर किसी की एक न मानी ।

ये बाल ब्रह्मचारी ब्राह्मण बालक सीधे ही घर से चलकर एक अद्वैतवादी सन्यासी विद्वान् वेदान्ती महात्मा के आश्रम में पहुँचे और उनसे वेदान्त का अध्ययन कर कुछ दिन बाद उन शिक्षा गुरु से आज्ञा ले भ्रमणार्थ निकल पड़े । भ्रमण करते हुए दैवयोग से एक दिन श्रीनिम्बार्कतीर्थ भी जा पहुँचे । यहां भगवदर्चन-पूजन, सन्त-सेवा, गो सेवा, सत्संग वेद-वेदान्त-स्वाध्यायआदि-आदि विविध पावन प्रसङ्गों का अवलोकन कर तथा श्रीस्वामीजी महाराज के दर्शन कर (आश्रम का सभी प्रकार से रहन-सहन देख) बड़े ही प्रभावित हुये। कुछ दिन यहां निवास करने पर और भी निष्ठा बढ गई । यह सद्गुरु की खोज में तो थे ही। एक दिन एकान्त में पञ्च संस्कार पूर्वक वैष्णवी विरक्त दीक्षा प्रदान करने हेतु आचार्यश्री से प्रार्थना की। श्रीस्वामीजी महाराज ने इनकी भावना देख विरक्त दीक्षा प्रदान करदी ।

आचार्यश्री ने अपने कृपापात्र (शिष्य) इस ब्रह्मचारी को दीक्षोपरान्त श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का द्वैताद्वैत सिद्धान्त,

उपासना तत्त्व, कपाल वेध मतानुसार व्रतोत्सवादि का वर्णन तथा वैष्णव धर्मोक्त आचार-विचार, भगवद्भक्ति एवं वैष्णव धर्म सम्बन्धी तात्त्विक विचारों से खूब परिपक्व बना दिया ।

एक बार यही ब्रह्मचारी महात्मा अपने परिभ्रमण काल में एक दिन उन्हीं शिक्षा गुरु के स्थान पर जा पहुँचे । इन्हें वैष्णवी वेशभूषा एवं कण्ठी तिलक धारण किये हुये देख आश्चर्यान्वित हो वे कहने लगे कि यह क्या किया ? ।

श्रीब्रह्मचारीजी ने सहर्ष प्रसन्नमुद्रा में उत्तर देते हुए कहा कि इसी वेश-भूषा एवं रहन-सहन में मुझे वास्तविक सुख-शान्ति की उपलब्धि हुई है । तब तो आपके शिक्षा गुरुजी ने एक जल का घड़ा भर कर आपको देते हुए कहा कि जावो यह घड़ा अपने गुरुजी के पास रख देना और मुख से कुछ नहीं कहना । आपने जल का घड़ा लाकर आचार्यचरणों के सामने रख दिया और साष्टांग दण्डवत् प्रणामादि कर सामने बैठ गये । यह दृश्य देख श्रीचरणों ने भी शक्कर के अनेक बतासे मंगवाकर उनसे बातचीत करते हुये एक-एक बतासा उस घड़े के जल में डालते गये । सब बतासे थोड़ी ही देर में घुल मिल कर जल मधुर बन गया तदनन्तर उन्हीं को वह जल का घड़ा देते हुए कहा कि जहां से लाये हो वहां ही ले जाकर उनके सामने रख देना और मुख से कुछ नहीं बोलना । श्रीचरणों की आज्ञानुसार

श्री तत्त्वेताचार्य जी अपने प्रथमोपदेशक गुरुजी के समक्ष आचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी (श्रीस्वामीजी) महाराज द्वारा प्रेषित सुमधुर घट (भक्तिरस पूरित) लिए हुए

वह जल घट ले जाकर वहां उनके सामने ही धर दिया गया ।

महात्माजी ने उसमें से जल लेकर पीया तो अत्यन्त मधुर लगा तब वे बोले कि देख भैया ! हमारा तात्पर्य यह था कि जब हमने इस पात्र को पूर्ण भर दिया अर्थात् विद्या में पूर्ण कर दिया तो फिर आपने क्या किया ? देखो यह जल मधुर है उनका कहना है कि आपने पात्र को पूर्ण तो भर दिया, किन्तु वह माधुर्य भक्ति रस परिपूर्ण नहीं था, हमने उसमें भक्ति का पुट देकर मधुरता का संचार कर दिया । अब जावो उन्हीं की चरण-शरण लेकर अपनी उन्नति करो । आप श्रीचरणों की सन्निधि में वापिस जाकर सेवा में संलग्न हो गये ।

(४) एक कुष्ठ रोगी पर कृपा--

एक दिन की बात है--एक कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्ति आचार्यश्री के सामने आया और दूर से ही प्रणाम करके बोला महाराज ! मैं कोढी हूँ प्रभो ! मेरा दुःख दूर करो ।

आचार्यश्री ने अपने सुधामयी कृपा दृष्टि पूर्वक अवलोकन करने के पश्चात् उसे धूनी की विभूति प्रदान करते हुए कहा कि जाओ श्रीसर्वेश्वर प्रभु तुम्हारा भी कष्ट दूर करेंगे। आपके दिव्य कृपा प्रसाद से उसका रोग दूर हो गया ।

उस समय ब्रह्मचारी टीकमदास भी आपकी सेवा में उपस्थित थे । कुष्ठ रोगी के चले जाने के बाद इन्होंने श्रीचरणों में निवेदन किया कि महाराज ! आत्मा तो निर्विकार है, फिर इस प्राणी ने यह क्यों कहा कि मैं कोढी हूँ । क्योंकि रोगादिक तो केवल २४ तत्त्वों से बने हुये इस क्षण भंगुर देह में ही होते हैं ? । इस पर आचार्यश्री ने कहा--यह पुरुष तत्त्वों का ज्ञाता नहीं अतः इसको यही भान होता है कि मैं रोगी हूँ, किन्तु सत्सङ्ग और विद्याध्ययन के प्रभाव से तुम्हें इन बातों का ज्ञान हो चुका है । तुम तत्त्वों से बने हुये नाशवान् शरीर और अविनाशी आत्म तत्त्व को पहिचान चुके हो अतः आज से लोक में तुम तत्त्ववेत्ता के नाम से प्रसिद्ध होवोगे ।
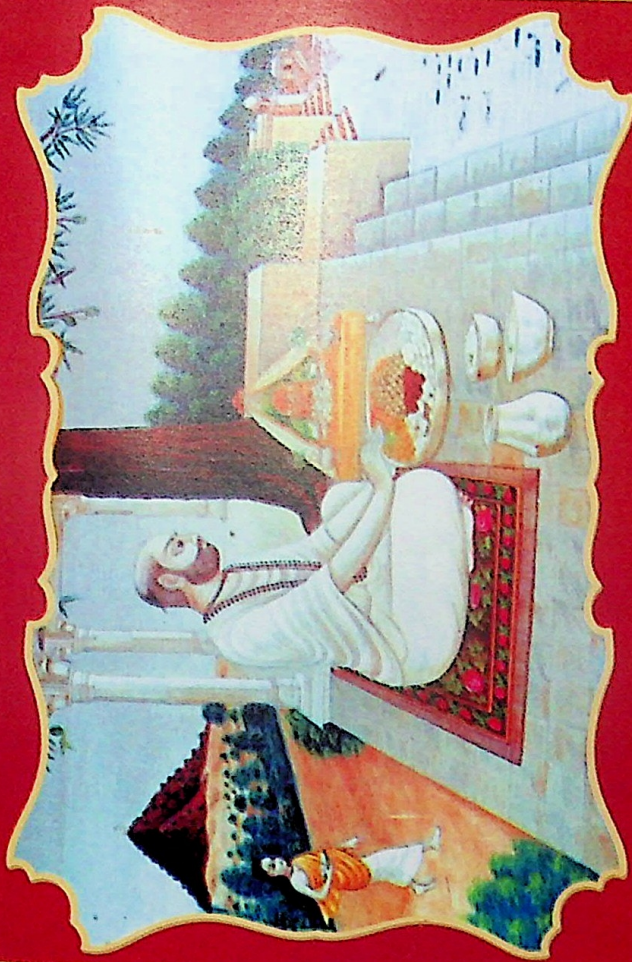
श्री तीर्थराज पुष्कर में ब्रह्मघाट के समीप श्रीसर्वेश्वर भगवान् की सेवा पूजा करते हुए
श्री परशुरामदेवाचार्यजी महाराज

श्रीगुरु कृपा से आगे चलकर यही ब्रह्मचारी श्रीतत्त्व-वेत्ताचार्यजी के नाम से प्रसिद्ध हुए जिन्होंने जयतारण में सुप्रतिष्ठित संस्थान श्रीगोपाल द्वारा स्थान की संस्थापना की जो कि जोधपुर राज्य के जागीरदार उदावत सरदारों का गुरुद्वारा कहलाता है । इस स्थान के कई एक संस्थान राजस्थान के कई एक नगरों में भी संस्थित हैं ।

(५) एक जिज्ञासु सन्त के प्रश्न का समाधान--

एक समय श्रीपुष्करराज के बृहदायोजन में आचार्यश्री बोल रहे थे कि--

माया सगी न मन सगो, सगो न यह संसार ।
परशुराम इस जीव को, सगो है सर्जन हार ॥

इतने ही में हाथ जोड़ कर खड़े हुये एक जिज्ञासु ने कहा कि महाराज ! जब ऐसी ही बात है तो फिर आप भी ये हाथी, घोड़े, छड़ी, छत्र, चँवर और सोने--चाँदी के पात्र आदि इस माया के पीछे-पीछे क्यों घूम रहे हैं ?

आपने प्रसन्न मुद्रायुक्त सहज स्वभाव से ही उत्तर देते हुए कहा कि भाई ! हम क्या करें, हम तो नहीं, पर यह माया ही हमारे पीछे-पीछे घूम रही है ।

इस पर जिज्ञासु कहने लगा कि महाराज ! यह केवल कहने की ही बात है या कोई इसमें ठोस प्रमाण । महाराज ने कहा कि भैया ! हाथ कंगन को आरसी की क्या आवश्यकता अर्थात् इससे बढ कर प्रत्यक्ष प्रमाण क्या होगा । लो इन सब को छोड़ कर चले जाते हैं । इतना कह कर एक-दो सन्तों के साथ में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा लेकर नाग पहाड़ की कन्दरा अर्थात् एकान्त स्थान में चले गये और वहीं पर आनन्द पूर्वक श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा-पूजा होने लगी ।

इस बात को अभी एक सप्ताह भी नहीं हो पाया कि उधर से एक **लखी बनजारा** (बड़ा भारी व्यापारी) अपने व्यापार की विपुल धनराशि लेकर घर जा रहा था । इसी कन्दरा (जहाँ श्रीस्वामीजी महाराज श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा लिये विराज रहे थे) के पास जल की सुविधा देख स्नान-भोजनादि हेतु अपना पड़ाव डाल दिया । थोड़ी ही देर बाद उधर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की मङ्गला-शृंगार आरती के झालर घन्टा बजने लगे । यह बनजारा (व्यापारी) परम वैष्णव था । बड़ा प्रसन्न हुआ । स्नान के पश्चात् सोचा चलो दर्शन कर आवें । पहुँचने पर देखा तो श्रीसर्वेश्वर प्रभु के आगे अपने गुरुदेव (श्रीस्वामीजी महाराज) ही विराज रहे हैं । यह आपश्री का ही कृपापात्र (शिष्य) था, बड़ी प्रसन्नता हुई दण्डवत् प्रणामादि के पश्चात् तुलसी-चरणोदक लेकर भगवान् तथा श्रीगुरुदेव के अच्छी मात्रा में अर्थ राशि भेंट की जिसमें सोने--चाँदी के

पात्र एवं छड़ी-छत्र-चँवर आदि भी थे । राजभोग सेवा भी अपनी ओर से सुसम्पन्न करवाई ।

इसी अवसर पर जिज्ञासु सन्त जो आपश्री की सन्निधि में निवास करते हुए भिक्षार्थ निकटवर्ती ग्राम से लौट कर आया तो उसने पूर्व की भाँति यहाँ भी श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में ठाठ-बाट देख कर श्रीस्वामीजी महाराज के चरणों में दण्डवत् प्रणाम कर क्षमा मांगता हुआ कहने लगा कि महाराज, मैंने मान लिया यह माया ही आपश्री के पीछे-पीछे आरही है आप नहीं ।

इस प्रसङ्ग के प्रमाणार्थ भक्तमाल के टीकाकार श्रीप्रियादासजी कृत एक कवित्त इस प्रकार है--

राजसी महन्त देखि गयो कोउ अन्त लैन,
बोल्यो जू अनन्त हरि संगी माया टारिये ।
चले उठि संग वाके त्यागि परिहरि कोपिन अङ्ग,
बैठे गिरि कन्दरा में लागि ठौर प्यारिये ।।
तहां बनिजारो आय सम्पत्ति चढाय दई,
दई और पालकी हू महिमा निहारिये ।
जाय लपटायो पांय भाव मैं न जान्यो कछु,
आन्यौ उर मांझ आवे प्रान वार डारिये ।।

(श्रीप्रियादासजी)

आपश्री के इन दिव्य चमत्कारों से प्रभावित होकर राजस्थान के अनेक राजा--महाराजा जैसे जयपुर, जोधपुर,

भरतपुर, बीकानेर, बून्दी आदि एवं उनके जागीरदारों ने आप से दीक्षा (मन्त्रोपदेश) लेकर शिष्यत्व स्वीकार किया और ग्राम तथा जमीनें श्रीठाकुरजी के भेंट की । आपके नाम पर किये गये पट्टे परवाना अद्यावधि पीठ में विद्यमान है । मेड़ता नरेश रावदूदाजी की पौत्री भक्तिमती मीरां आप ही की शिष्या थी ।

आपने परम लोकोपयोगी श्रीपरशुरामसागर[1] नामक एक विशाल ग्रन्थ की रचना की है । इस विशाल ग्रन्थ रत्न में समन्वयात्मक रूप में राम-कृष्ण की एकता, निर्गुण-सगुण उपासना आदि सबको सम्मान देते हुए व्यापक दृष्टिकोण से केवल मात्र भगवत्प्राप्ति की ओर जीव के लिये अग्रसर होने का लक्ष्य है । अतः सर्वजन हितैषी यह ग्रन्थ अवश्य देखकर मनन करने योग्य है ।

इस प्रकार वैष्णव धर्म की विजय पताका फहराते हुए तथा भगवद्भक्ति का प्रचार-प्रसार करते हुए दीर्घकाल लगभग एक शताब्दी से अधिक इस धराधाम पर विराजमान रहकर

---

१ इस विशाल ग्रन्थ पर डा. श्रीरामप्रसाद शर्मा एम. ए. पी. एच. डी. पूर्व प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय किशनगढ राजस्थान ने आचार्य श्रीपरशुरामदेव नामक शोध ग्रन्थ लिख कर पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है । जिसमें आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का भलि-भांति दिग्दर्शन कराया गया है ।

श्रीपुष्करराज में इहलीला संवरण की । पुष्कर परिक्रमा में श्री ब्रह्मघाट के पास आपका यह संस्थान **श्रीपरशुरामद्वारा** के नाम से प्रसिद्ध है, जहाँ आपकी दिव्य समाधि के दर्शन होते हैं। इहलीला संवरण के समय एक ही साथ श्रीनिम्बार्कतीर्थ, श्रीपुष्करराज तथा श्रीवृन्दावन विहार घाट, इन तीनों स्थानों में सभी भक्तों को आपके दर्शन हुए । आज भी आपके दर्शन जिस पर कृपा हो जाती है, होते हैं ।

आपकी महिमा का वर्णन श्रीभक्तमाल के रचियता स्वामी श्रीनाभाजी महाराज ने भक्तमाल में इस प्रकार किया है---

ज्यों चन्दन को पवन निम्ब पुनि चन्दन करई ।
बहुत काल तम निबिड उदय दीपक ज्यों हरई ।।
श्रीभट्ट पुनि हरि व्यास सन्त मारग अनुसरई ।
कथा कीरतन नेम रसन हरि गुन उच्चरई ।।
गोविन्द भक्ति गद रोगगति तिलक दाम सदवैद हद ।
जंगली देश के लोग सब श्रीपरशुराम किये पारषद ।।

महात्मा श्रीराघवदासजी महाराज ने भी आपकी महिमा का वर्णन ज्यों का त्यों इस प्रकार किया है---

मलिया ढिंग बहु वृक्ष वात सुचन्दन कीना ।
है हरि नाम मसाल अन्धेरा अघ हरि लीना ।।

भक्ति नारदी भजन कथा सुनते मन राजी ।
श्रीभट्ट पुनि हरिव्यास कृपा सतसंगति साजी ।।
भगवन्त नाम औषधि पिवाइ रोग दोष गति करि दिया ।
अजमेरा के आदमी श्रीपरसराम पावन किया ।।
(महात्मा श्रीराघवदासजी)

श्रीपरशुरामदेवाचार्य (श्रीस्वामी) जी महाराज के हवन कुण्ड (धूनी) की आराधना एवं विभूति की प्रसादी से अनेक राजा--महाराजा, जागीरदार तथा भक्तजनों की मनः कामना पूर्ण हुई और आज भी हो रही है--इसके कतिपय उदाहरण आगे पढ़िये ।

(६) जयपुर नरेश सवाई श्रीजयसिंहजी (द्वितीय)--

जयपुर नरेश महाराजा जगतसिंहजी के कोई सन्तान नहीं थी । वि० सं० १८७५ में उनका स्वर्गवास हो गया । उनकी एक रानी उस समय गर्भवती थी, किन्तु जयपुर राज्य परिवार के कुछ सामंतों ने मोहनसिंह नामक एक व्यक्ति के राज्याभिषेक का निश्चय कर लिया । इस निश्चय पर कुछ सामन्तों ने उनको यह कह कर रोका कि रानीजी के प्रसव की

प्रतीक्षा की जाय । इस बात पर दोनों पक्ष सहमत हो गये । महारानी भटियानी श्रीआनन्दकुँवरीजी ने जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री **श्रीजी महाराज** (श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी) से प्रार्थना की और उनकी आज्ञानुसार पुत्र प्राप्त्यर्थ श्रीसर्वेश्वर प्रभु की विशेष आराधना आरम्भ कर दी । श्रीस्वामीजी श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के हवन कुण्ड (धूनी) पर हवन करवाया गया । प्रभु कृपा से रानी साहिबा के राजकुमार का जन्म हुआ । उनका नाम श्रीजयसिंहजी (तृतीय) रक्खा गया । जयपुर राज्य की समस्त प्रजा में हर्षोल्लास छा गया । इस जन्मोत्सव के उपलक्ष्य पर एक वर्ष बाद जयपुर राज्य के पूज्य गुरुदेव श्री श्रीजी श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का विशिष्ट स्मृति महोत्सव (मेला) किया गया । उसमें राज्य की ओर से एक लाख रुपये की अर्थराशि खर्च हुई । इसी प्रकार आचार्यपीठ की ओर से भी इतना ही व्यय हुआ । यह मेला (भण्डारा महोत्सव) एक ऐतिहासिक था । इसमें घृत के कुण्ड बनवाये गये थे । चारों ओर के सन्त-महान्तों को आमन्त्रित किया गया था । जयपुर के सुप्रतिष्ठित कवि श्रीमण्डनजी ने इस भण्डारे का अपनी कविता में विशद रूप से वर्णन किया है, उस पुस्तक का नाम हैं--**जय शाह सुजस प्रकाश** ।

वि० सं० १८७८ में श्रीवृन्दावन धाम के एक विशाल मन्दिर की नींव लगी । ५१ हजार घन फुट जमीन पर पाँच वर्ष

के सतत परिश्रम से जयपुर के शिल्पियों ने अनुपम मन्दिर का निर्माण किया ।

जयपुर राजमाता भटियानी रानी आनन्दकुमारीजी ने अपने गुरुदेव श्री श्रीजी श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी महाराज के आदेशानुसार यह मन्दिर बनवा कर अपने नाम को भी प्रभु में संलग्न रखने के लिए वि० सं० १८८३ ज्येष्ठ शु० ६ को ठाकुर श्रीआनन्दमनोहर वृन्दावनचन्द्रजी महाराज की प्रतिष्ठा करवाई, पूजा-सेवा के लिए तीन ग्राम भेंट किये और श्री श्रीजी महाराज के अर्पित कर दिया । जो कि श्री श्रीजी महाराज की बड़ी कुञ्ज, इस नाम से रेतिया बाजार वृन्दावन में सुप्रसिद्ध है ।

आज कल यह कुञ्ज--श्री श्रीजी मन्दिर प्रताप बाजार वृन्दावन, के नाम से भी विख्यात है ।

श्रीस्वामीजी महाराज के प्रति जयपुर के सुप्रसिद्ध कवि मण्डन के उद्गार--

परशुराम महाराज ने हरि राधा गुण गाय ।
कोटिन जीवन को दियौ, होवो मुक्ति बताय ।।
नवों खंड जानत सकल जस छायो ब्रह्मंड ।
परशुराम महाराज को जप-तप तेज अखंड ।।

जिनने जगतजमाय दिये सकलधर्म के काज ।
परशुराम महाराज से परशुराम महाराज ।।
परशुराम यह नामवर मुख बोलो इकबार ।
कहत बार सब हो हुये, भवसागर के पार ।।

चित चाह्यो फल हाथ दे सेवक कियो सनाथ ।
परशुराम की गाथ के चलत संतजन साथ ।।
इक मुख से कहिये कहा महिमा परम विशेष ।
परशुराम महाराज के गाय सकत गुणशेष ।।

परशुराम महाराज दिये तजि कोटिन की लच्छ ।
तपे जाप गिरि कन्दरा जग जानत परतच्छ ।।
हय गजस्थ सुखपाल फिर कंचन झरसरसाय ।
परशुराम के चरण सूं लगी लच्छमी आय ।।

कियो सलेमाबाद में अपन रहन को थान ।
परशुरामदूजे भये प्रकट भूमि के मान ।।
(जयपुर वास्तव्य कविराज मण्डन कृत-जयशाह सुजस प्रकाश)

पीसांगण राजा श्रीरणछोड़सिंहजी--

श्रीस्वामीजी महाराज (श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी) दशवीं पीठिका में जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीघनश्यामशरण-देवाचार्यजी महाराज के संमय की बात है--

पीसांगण के राजा साहब श्रीगन्धर्वसेनजी परम धार्मिक भगवद्भक्त थे एवं भगवान् श्रीसर्वेश्वर--राधामाधव एवं आचार्य-चरणों में उनकी अगाध निष्ठा थी । उनके समय में भगवान् श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव की सेवा हेतु पीसांगण से प्रतिदिन गुलाब के पुष्प श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ भेजे जाते थे । पुष्प ले जाने वाला व्यक्ति ही भगवान् की तुलसी चरणोदक लेकर पहुँचता, उसे लेकर फिर आप भोजन प्रसादी करते थे । उस समय मोटर-स्कूटर आदि त्वरित गति से चलने वाले वाहनों का भी अधिक प्रचलन नहीं था, केवल घोड़े-ऊँट आदि की सवारी थी, इससे बढ कर आपकी अगाध निष्ठा का और क्या परिचय हो सकता है ।

भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की तुलसी चरणोदक एवं इत्र प्रसादी तथा श्रीस्वामीजी महाराज के हवन कुण्ड की विभूति इन के अगाध निष्ठा पूर्वक परिसेवन से ही आपकी पुत्र कामना पूर्ण होकर फलस्वरूप राजकुमार का जन्म हुआ, जिनका नाम श्रीरणछोड़सिंहजी रखा गया । उस समय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में आकर श्रीस्वामीजी महाराज की तपःस्थली में राजकुमार

का चोटी (जडूला) और भगवान् के राजभोग सेवा आदि सुसम्पन्न कर अपना मनोरथ पूर्ण किया । उनके यहाँ से भेंट रूप में आया हुआ रथ, पालकी आदि आज भी पीठ में विद्यमान है ।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज जब जयपुर के स्थानों का परित्याग कर श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमा-बाद) में आये थे, साथ में पाँच-पचास सन्त भी थे, जो कि भण्डारी, रसोइया, पुजारी और मुखिया आदि पदों पर थे । स्थान में खर्चा बढा, फिर ३-४ वर्ष तक बराबर अकाल की परिस्थिति भी सामने आई । श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा-पूजा, सन्त-सेवा में कठिनाई देख तत्कालीन श्रीपीसांगन नरेश ने अपने राज्य का पट्टा कर भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवार्थ आचार्यश्री को भेंट कर दिया । महाराजश्री ने पढकर देखा तो आपकी इस निष्ठा की सराहना करते हुए कहने लगे कि राजन् ! भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु के तो चतुर्दिक (चारों कूंट) जागीरी में हैं यह तो काम भगवान् का चलता ही रहेगा किन्तु आपको परिवार का भरण-पोषण करने में कठिनाई पड़ेगी, अतः ऐसा न करें । बहुत कुछ समझाने पर भी दी हुई वस्तु को वापिस न लेने का हठ देखकर आचार्यश्री ने दूसरे दृष्टिकोण से कहा--अच्छा तो अब यह बताओ कि हम कोई प्रसाद आपको

देवें तो लेंगे या नहीं । भगवन् ! प्रसाद तो सहर्ष आगे हाथ बढाकर अपने आपको परम सौभाग्यशाली मानता हुआ लूँगा। इस पर महाराजश्री ने कहा--अच्छा तो यह राज्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु का ही है हम आपको प्रसाद रूप में दे रहे हैं और इसमें से २००) रु. की अर्थ राशि प्रतिवर्ष भगवान् के भेज दिया करना। इस आदेश को स्वीकार किया और वह वार्षिक भेंट स्वतन्त्र भारत सरकार होने के पूर्व अंग्रेजी शासन में बराबर आ रही थी । इस प्रकार पीसांगण राज्य और श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है ।

श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज के आचार्यत्वकाल में-

आचार्यपीठ में मन्दिर प्राङ्गण में जहाँ नित्य श्रीभगवन्नाम संकीर्तन होता है, वहाँ एक विशाल गोलाकृति में पत्थर चूना का बना तुलसी थांवला था, उसकी सब परिक्रमा करते थे। एक समय आचार्यवर्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज प्रातः मङ्गला आरती के अनन्तर परिक्रमा लगा रहे थे। आपको ऐसा अनुभव हुआ कि हमारे पृष्ठभाग में कोई चल रहा है । पीछे घूमकर देखा तो लगा कि श्रीस्वामीजी महाराज जैसे दर्शन हुए, निकट पहुँचने पर विलुप्त, तब पुजारियों से जानकारी करने पर ज्ञात हुआ कि केवल आचार्यश्री ही परिक्रमा लगा रहे हैं, इतर व्यक्ति आपश्री के साथ-साथ चलने का कैसे साहस कर सकता है, निश्चय ही श्रीस्वामीजी महाराज ही थे जो कि अदृश्य हो गये ।

(६) आचार्य प्रवर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज के समय की ही एक भक्त के वंश वृद्धि की चमत्कार पूर्ण घटना इस प्रकार है--

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) से पश्चिम की ओर दो मील की दूरी पर जंगल में एक मालाराम चाड़ (गूजर) का केवल एक कच्चा घर और उसके चारों ओर काँटों का बाड़ा था । परिवार में वह और उसकी पत्नी तथा एक विधवा लड़की, ये तीन प्राणी थे । मालाराम चाड़ भेड़-बकरी रखता था । दिन भर जंगल में इधर-उधर उनको चराना यही उसका एकमात्र व्यवसाय था । इसी व्यवसाय में वह धन सम्पन्न भी हो गया। खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी, पर उसके सन्तान (लड़का) न होने के कारण वह सदा चिन्तित रहता था ।

एक दिन की बात है, श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के पण्डित श्रीरामधनजी तथा श्रीलक्ष्मीनारायणजी बोरायड़ा व्यास यजमान वृत्ति करते हुए इधर से आ निकले जहाँ पर वह भेड़-बकरी चरा रहा था । उसने दोनों हाथ जोड़े, उन्होंने आशीष दी। थोड़ी देर वहीं वृक्ष के नीचे बैठ गये । परस्पर कुशल मङ्गल पूछने के पश्चात् प्रसङ्ग चल पड़ा, जिस दुःख से वह दुःखी था।

इसका समाधान करते हुए दोनों पण्डितों ने कहा-देख तू छुप-छुपकर भगवान् श्रीसर्वेश्वर के जङ्गल सागरमाला में भेड़-बकरी चराता है और लकड़ी भी काट लाता है, कभी दर्शन करना या पाई पैसा भेंट करने का काम नहीं--किसी ने सच ही कहा है-रोपे पेड़ बंबूल का आम कहाँ ते खाय वही हालत तुम्हारी है । इस पर उसने कहा-बात ठीक ही है, अब आगे ऐसा नहीं होगा, किन्तु मेरी चिन्ता निवृत्ति का कोई उपाय ?

उपाय यही है, आचार्यश्री की पधरावनी कराकर उनका चरण पूजन कर शुभाशीर्वाद प्राप्त कर, भगवान् श्रीसर्वेश्वर की कृपा से सब मनोरथ पूर्ण होंगे, विश्वास दिलाते हुए पण्डितों ने कहा ।

आप लोग भी क्या कह रहे हो ? ऐसे मेरे भाग्य कहां जो कि मेरे घर महाराजश्री का पधारना हो, जब कि बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी इस सुअंवसर के लिए लालायित रहते हैं ।

दोनों पण्डित बोले तू इसकी चिन्ता मत कर । यदि हृदय में श्रद्धा-प्रेम भावना हो तो सब कुछ हो सकता है, भगवान् शबरी और विदुर के यहां भी तो पधारे थे । तेरी भावना हो तो हम महाराजश्री से प्रार्थना करें। मालाराम ने नम्रता पूर्वक कहा- मैं हृदय से चाहता हूँ ऐसी कृपा हो तो कहना ही क्या ? हम तेरी ओर से प्रार्थना करेंगे, ऐसा कह कर दोनों पण्डित आ गए ।

दूसरे दिन जब मन्दिर में दर्शन कर जब आचार्यप्रवर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज को पञ्चाङ्ग श्रवण कराने हेतु सेवा में पहुँचे तो श्रीचरणों की प्रसन्न मुद्रा देख निवेदन किया कि सरकार ! आपकी बस्ती ही का एक गूजर मालाराम है, वह पधरावनी कर चरण पूजन करना चाहता है, उसकी भावना है, फिर भगवन् ! विशेष कोई दूर या असुविधा की बात नहीं । नित्य प्रति सरकार का जिधर घूमने जाना होता है, बस वहीं उस सेवक का घर है सो उधर लौटते समय १०--१५ मिनट के लिए कृपा हो जाय । स्वीकृति हो गई । पण्डितों ने उसे सूचना कर दी । उसने निर्देशानुसार तैय्यारी कर ली । निर्धारित समय पर श्रीचरणों का वहाँ पधारना

हो गया । मालाराम के हर्ष का पारावार नहीं। पग-पाँवड़ा पूर्वक पधरावनी कर चरण पूजन किया और यथा-शक्ति भेंट की । जब आरती करने लगा तो उसके हाथ काँपने लगे और आँखों से आँसू बहने लगे ।

यह देख कर तत्काल ही परम दयालु महाराजश्री ने कहा क्यों, क्या बात है, ऐसा क्यों ? इस पर दोनों पण्डितों ने तुरन्त सहारा लगाते हुये कहा कि महाराज ! क्या बताया जाय दाल रोटी का तो इसके यहाँ कोई घाटा नहीं, पर इसके कोई सन्तान नहीं, यह एक लड़की है सो भी विधवा । अतः सन्तान न होने से यह दुःखी है और कोई बात नहीं । महाराजश्री ने प्रसन्न मुद्रा में ही कहा अभी कोई इसकी उम्र ज्यादा थोड़े ही हुई है । ३०-४० वर्ष का है, चिन्ता क्यों करता है ? भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा हुई तो एक क्या सात पुत्र होंगे । अब तो सभी ने एक साथ भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की बड़े ही हर्ष के साथ उच्च स्वर से जयघोष की ।

महाराजश्री के शुभाशीर्वाद द्वारा समय पाकर क्रमशः उसके सात ही पुत्र हुये और फिर उन्हीं सातों की सन्तान द्वारा इतनी वंश वृद्धि हुई कि जिस स्थान पर मालाराम चाड़ का घर था उसी स्थान पर आज मोतीपुरा नाम का एक ग्राम बसा हुआ है, जिसमें उसी परिवार के सब घर हैं । भगवत्कृपा से आज भी ये सभी घर धन-जन सम्पन्न हैं । यह ग्राम ही नहीं, इसके अतिरिक्त इसके गाँव से थोड़ी दूर पर इसी वंश के घासी चाड़ की ढाणी भी प्रसिद्ध है । इस वंश की श्रीस्वामीजी में पूर्ण श्रद्धा है । वर्तमान आचार्यश्रीचरणों की ४-५ बार बड़े समारोह

पूर्वक पधरावनी की हैं, सहस्त्रों रुपये खर्च कर बावन्नी आदि बड़े-बड़े कार्य सम्पन्न किये हैं, तीन धाम की यात्रा आचार्यश्री के साथ तथा कुम्भ आदि पर्वों पर भी जाते रहे हैं ।

मालाराम चाड़ के सात पुत्र हुये और एक विधवा लड़की थी, उसी क्रमानुसार उसके वंश में, फिर जिस किसी के २-४-५ सन्तान हुई उसकी तो कोई बात नहीं, पर किसी के सात लड़के हो गये हों, तब तो उनके वही १ बहिन हुई और वह विधवा भी हुई । यह परम्परागत इतिवृत्त हमको अधिकारी श्रीनरहरिदासजी ने सुनाया और साथ ही यह भी कहा कि आज भी घासी चाड़ के ७ लड़के हैं तो उसकी वही एक लड़की विधवा भी है । उस समय की बात का अब भी यह प्रत्यक्ष चमत्कार है ।

इसके अतिरिक्त एक बार रिड़ के राठी परिवार ने भी श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज की पधरावनी कराई और दस हजार कलदार चान्दी के रुपयों की चबूतरी बनवाकर उस पर आपश्री को विराजमान करके चरण पूजन कर वह धन-राशि भेंट की । तब आपने कहा हम साधु लोग हैं इतने रुपयों का क्या करेंगे। भक्त परिवार ने प्रार्थना की महाराज ! यह तो आपश्री के ही भेंट है तब आपने आज्ञा दी कि अच्छा इस अर्थराशि से भगवान् श्रीराधामाधवजी के बङ्गला बनवा देंगे वह चांदी का बङ्गला आज भी पीठ में विद्यमान है । जिस पर श्रीराधामाधव प्रभु परम सुशोभित है । इस बंगला पर निर्माणकाल वि० सं० १९४५ अङ्कित है ।

श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज के आचार्यत्वकाल में-

(१०) जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज के समय में भी श्रीस्वामीजी महाराज के हवन कुण्ड की विभूति तथा श्रीसर्वेश्वर प्रभु के तुलसी एवं इत्र प्रसाद का परिसेवन और आचार्यश्री के शुभाशीर्वाद के फलस्वरूप ही वर्तमान ठा० सा० ठिकाना कादेड़ा (अजमेर) का जन्म हुआ था ।

(११) जोधपुर (राज.) वास्तव्य महात्मा श्रीराधिकादासजी श्रेष्ठ सिद्ध सन्तों में उल्लेखनीय हैं । इनका जोधपुर क्षेत्र में ही क्षत्रिय परिवार में जन्म हुआ, और ये हिन्दी-अंग्रेजी संस्कृत की सामान्य शिक्षा प्राप्त कर जोधपुर महाराज की सेना में एक सिपाही के रूप में कुछ समय पर्यन्त सेवा रत रहने के अनन्तर जोधपुर से विरक्त भाव से श्रीवृन्दावनधाम के लिये प्रस्थान कर यहाँ निवास करते हुए निम्बार्क सम्प्रदाय के महात्मा से वैष्णवी विरक्त दीक्षा प्राप्त कर भगवान् श्रीराधाकृष्ण की उपासना में तल्लीन हो गये । प्रसङ्गवशात् पुनः ये जोधपुर आकर पर्वत-कन्दरा में अपने आराध्य के चिन्तन में निमग्न रहते, शनैः शनैः इनकी उत्तम सन्तों में मान्यता होने लगी जोधपुर नरेश महाराजा श्रीउम्मेदसिंहजी स्वयं इनके दर्शनार्थ पधारते । दर्शनातुर भक्तों का समुदाय भी अधिकमात्रा में उपस्थित होने लगा । इसी सन्दर्भ में समय-समय पर ये यहाँ आचार्यपीठ श्रीसर्वेश्वर प्रभु, भगवान् श्रीराधामाधवजी के तथा

आचार्यवर्य अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यश्री के दर्शनार्थ आते रहते थे। जब ये प्रथमबार आचार्यपीठ आये तो काष्ठ की खडाऊ पहने मन्दिर परिसर में प्रवेश करने लगे द्वारपाल ने द्वार पर उन्हें यह कहते हुए निषेध किया कि यहाँ पर आचार्यप्रवर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की खडाऊ की नित्य-अर्चना होती है, केवल आचार्यपीठस्थ आचार्यश्री ही खडाऊ धारण कर सकते हैं, इतरजनों के लिये खडाऊ प्रयोग करना निषिद्ध है ।

महात्मा श्रीराधिकादासजी ने द्वारपाल तथा अन्य स्थानीय अधिकारी, सन्त-महात्माओं के निषेध करने पर भी इस नियम की अवहेलना की तथा अपना निवास स्थान भी उन्होंने श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज (श्रीस्वामीजी) के हवन कुण्ड स्थल के चौक को ही चुना । सभी के बार-बार मना करने पर भी उन्होंने अपना आसन वहीं जमाया । ग्रीष्मावसर पर अर्द्धरात्रि के समय २ बजे लगभग उन्होंने सिंह की तीव्र गर्जना एवं प्रखर जाज्वल्यमान प्रकाश पुञ्ज को देख और भी अति भयाकुल हो उच्चस्वर से त्राहि-त्राहि उच्चारण करते हुए चेतना शून्य हो गये साथ ही तीव्र ज्वर से प्रकम्पित अवस्था में व्याकुल हो भूमि पर गिर गये । ऊपर के कक्ष से दौड कर आये हुए स्थानीय सन्त-परिकर द्वारा विविधोपचार के बाद जब वे चेतनावस्था में आये तब उनसे सन्तों द्वारा जिज्ञासा करने पर ज्ञात हुआ कि वे श्रीस्वामीजी महाराज के यहाँ अज्ञानतावश खडाऊ प्रयोग एवं उनके सिद्ध स्थल पर अपने निवास का दुस्साहस किया उसी के फलस्वरूप यह अघटित

घटना घटी । इस उक्त घटना के अनन्तर वे जब भी यहाँ आते एक-एक मास पर्यन्त निवास करते तो यहाँ मन्दिर परिसर में न ठहर कर निम्बार्कतीर्थ सरोवर के निवास स्थल पर ही रहते। इस प्रकार इन आचार्यश्री के ऐसे अनेक प्रसङ्ग चमत्कारपूर्ण हैं।

(१२) एक बार निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में आचार्यपीठ के प्रमुख द्वार के सन्मुख अर्द्ध रात्रि के समय सलेमाबाद वासी जनों के द्वारा भक्तवर श्रीनरसी मेहता के चरित-अभिनय अर्थात् राजस्थानी मारवाड़ी भाषा में ख्याल का आयोजन चल रहा था, उक्त अभिनय के प्रसङ्ग में बैलगाड़ी को ठीक करने जब सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण एक बाडई के रूप में बसोला-हथौडा आदि साधन युक्त पधारते है, इस उक्त दृश्य को बताने हेतु जब मन्दिर द्वार पर चल रहे श्रीनरसी-अभिनय में निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) निवासी श्रीहरलालजी जाँगीड़ बसोला आदि लेने मन्दिर परिसर के श्रीस्वामीजी महाराज की तपःस्थली निकटस्थ बरामदे में पहुँचे तो अकस्मात् श्रीस्वामीजी महाराज के प्रत्यक्ष भव्य स्वरूप दर्शन कर सशङ्क भयाकुल हो लौटते हुए अचेत स्थिति में द्वार के समीप भूमि पर गिर पड़े । जब सभी को उनकी इस दशा का भान हुआ तो सब आश्चर्यचकित हो गये और कुछ क्षणों बाद जब उन्हें वाह्य ज्ञान हुआ तो अपनी उक्त घटना का सभी को विवरण सुनाया । सभी ने एक स्वर से कहा तुम बड़े भाग्यशाली हो जिससे आचार्यवर श्रीस्वामीजी महाराज के सहज दर्शन लाभ हो गये । तुम्हें चाहिये था उनके मङ्गलमय पावन चरणारविन्दों का स्पर्श कर लेते ।

वस्तुतः श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी (श्रीस्वामीजी) महाराज आज भी समय-समय पर अपनी मङ्गलमयी कृपा से अपने दिव्य दर्शन देकर भगवज्जनों को कृतार्थ कर देते हैं ।

वर्तमान जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के समय के विभिन्न प्रसङ्ग--

(१३) मथुरा वास्तव्य वैद्यप्रवर श्रीवैकुण्ठनाथजी शर्मा (श्रीविहारीशरणजी) आयुर्वेदाचार्य व्रजमण्डल के सुप्रसिद्ध आयुर्वेद-चिकित्सक हैं । उनके परोपकारी औषधालय एवं बी. एन् फार्मेसी नाम से दो चिकित्सालय सञ्चालित है । वैद्यजी ने वर्तमान आचार्यश्री से ही मन्त्रोपदेश प्राप्त किया है । आपकी सद्यः फलप्रद चिकित्सा व्रज में सर्वत्र प्रख्यात है । आपके विवाह सम्बन्ध हुए २५ वर्ष व्यतीत हो चुके थे अनेक तन्त्र-मन्त्र, विविध अनुष्ठानों, गिरिराज गोवर्धन की दण्डवती परिक्रमाओं अनेकविध औषधोपचारों आदि के करने पर भी सन्तति प्राप्ति का पावन मनोरथ सफल नहीं हुआ । जब एक बार वे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोतसव पर श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्क तीर्थ पधारे तो आचार्यश्रीचरणों ने उनसे श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की तपोभूमि जहाँ परम दिव्य भव्य आपश्री के चित्रपट के मङ्गल दर्शन एवं हवन कुण्ड विद्यमान है वहाँ अपने अभीष्ट मनोरथ प्राप्ति हेतु विधिवत् अर्चना हेतु मङ्गल-आज्ञा प्रदान की । यद्यपि वैद्यजी को यह कहते हुए

सन्देह हो रहा था कि इतना दीर्घकाल व्यतीत हो चुका है अब तो असम्भव ही है । तथापि आचार्यश्री की आज्ञा को शिरोधार्य करकेश्रीस्वामीजी महाराज की अपनी मानसिक उत्कण्ठा के साथ सोल्लास अर्चना की । अत्यन्त विस्मय है कि उसी वर्ष एक बालक ने जन्म लिया, सम्पूर्ण परिवार हर्षोल्लास से नाच ऊठा । दैवयोग से उस बालक का दो वर्ष पश्चात् ही कुछ अवस्था के बाद अवसान हो गया । वैद्यजी बड़े दुःखी हुए कुछ आक्रोश में आचार्यश्रीचरणों के पास पत्र द्वारा अपनी व्यथा प्रकट की । आचार्यश्री ने पत्रोत्तर में संकेत किया आप विचार न करें श्रीस्वामीजी महाराज पुनः कृपा करेंगे । परमाश्चर्य है कि अविलम्ब ही क्रमशः गोविन्द, अनुराधा, कन्नु, मन्नु इन तीन सुपुत्र और कन्या ने जन्म लिया । वैद्यजी का आज सम्पूर्ण घर परिवार से भरापूरा एवं समृद्ध है । ज्येष्ठ पुत्र वैद्य गोविन्द दिल्ली में चिकित्सारत है । वैद्य कन्नु बी. एन. फार्मेसी मथुरा में सफल चिकित्सक है । मन्नु मथुरा में ही सुन्दर व्यवसायरत है । अनुराधा संगीत विशारद दिल्ली में अवस्थित है । श्रीस्वामीजी महाराज के इस अनिर्वचनीय कृपाप्रसाद से सभी परम आह्लादित है । इस विस्मयकारी चमत्कृति का यह प्रत्यक्ष दर्शन है ।

(१४) मुम्बई निवासी अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विश्वप्रसिद्ध भजन सङ्गीत सम्राट् परम मधुर गायक आशुकवि श्रीरवीन्द्रजी जैन जब वर्तमान आचार्यचरण श्री श्रीजी महाराज का मुम्बई यात्रा के क्रम में भक्तवर श्रीकन्हैयालालजी कासट के भवन में विराज रहे थे, तब आकाशवाणी-निदेशक (दिल्ली)

के परम प्रख्यात शास्त्रीय संगीत महारथी श्रीहरिचरणजी वर्मा भी आपश्री के साथ ही थे । उक्त अवसर पर श्रीरवीन्द्रजी जैन श्रीचरणों के दर्शनार्थ उपस्थित हुये । प्रसङ्गवशात् श्रीवर्माजी ने श्रीरवीन्द्रजी के सन्तति अभाव की चर्चा की । श्रीआचार्य-चरणों ने आचार्यप्रवर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की मानसिक अर्चना का भाव व्यक्त करते हुए कहा कि श्रीस्वामीजी महाराज के कृपाप्रसाद से अवश्य ही आपका मनोरथ पूर्ण होगा । अत्यन्त विस्मयावह यह प्रसङ्ग है कि उसी वर्षावधि में ही उनके भाग्यशाली पुत्र ने जन्म लेकर पूरे घर को आनन्दित कर दिया ।

श्रीरवीन्द्रजी जैन जब आचार्यपीठ में व्रजदासी भागवत विमोचन समारोह में आये तब अपने प्रस्तुत भजन में उसी पुत्र प्राप्ति भाव को सहस्रों-सहस्रों भक्तों के मध्य अपने कलकण्ठ से गाकर सभी को भक्तिरस में विभोर कर दिया । उक्त अवसर पर श्रीरामकथा प्रवक्ता युगसन्त श्रीमुरारी बापू भी उपस्थित थे । व्रजदासी भागवत का विमोचन श्रीबापू द्वारा ही सम्पन्न हुआ था । श्रीस्वामीजी के एवंविध अनेक अनुपम प्रसङ्ग है जो यथार्थ में अतिविलक्षण और चमत्कृति पूर्ण हैं ।

(१५) श्रीमद्भागवत एवं श्रीरामचरितमानस प्रवक्ता पं० श्रीहरिप्रसादजी जोशी अहमदाबाद (मथुरावासी) द्वारा पुष्कर के माहेश्वरी भवन में भक्तवर श्रीरामपालजी मन्त्री की पवित्र भावनानुसार कथा का सुन्दर आयोजन हुआ । मन्त्रीजी की सश्रद्ध उत्कण्ठा पर वर्तमान आचार्यचरण श्री श्रीजी महाराज का कथा के अवसर पर पुष्कर पादार्पण हुआ । श्रीरामपालजी मन्त्री ने बड़ी निष्ठा के साथ आपश्री का भव्य स्वागत करते हुए चरणार्चन किया । कथा के अनन्तर एक दिन श्रीमन्त्रजी

स्वयं पं० श्रीहरिप्रसादजी को आचार्यपीठ लेकर आये पण्डितजी सपत्नीक थे, उन्होंने आचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के महिमामय स्वरूप के दर्शन तथा आपके पावन चरित के प्रसङ्ग को श्रवण कर श्रीआचार्यचरणों की सन्निधि में उपस्थित होकर सन्तति कामना का भाव प्रकट किया । श्रीचरणों ने भी श्रीस्वामीजी महाराज के यहाँ सपत्नीक उपस्थित होकर अर्चना का संकेत किया । उन्होंने बड़े ही श्रद्धाभाव के साथ विधिवत् अर्चन-वन्दन किया । परिणाम स्वरूप तत्काल ही उसी वर्ष उनके एक साथ ३ बालक-बालिकाओं ने जन्म लिया । साश्चर्य वे पुनः श्रीगुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर आचार्यपीठ उपस्थित होकर श्रीस्वामीजी महाराज का समर्चन किया । उनके एक बालक और एक बालिका अभी भी सकुशल है । उसी समय से वे प्रति गुरुपूर्णिमा को आचार्यपीठ आकर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं। वस्तुतः श्रीस्वामीजी महाराज की अहैतुकी कृपा का वर्णन करना कठिन है ।

श्रीस्वामीजी महाराज के हवन कुण्ड की विभूति का

* प्रत्यक्ष चमत्कार *

(१६) भक्तवर श्रीव्रजमोहनजी छापरवाल कुचामन सिटी की माताजी भक्तिमती श्रीसरजूबाई ईस्वी सन् १९७१ में बीमार हो गई । डाक्टरों ने ब्लड-प्रेशर, खांसी, श्वास और बुखार आदि का एक साथ बीसों ही बीमारी बतला दी । दि० २४/११/७१ को तो घर वाले बिल्कुल ही निराश हो गये थे । सारे परिवार के लोगों ने बिमार की हालत देखकर रोना बिलखना आरम्भ कर दिया था ।

श्रीब्रजमोहनजी ने माताजी के पास में जाकर पूछा कि आप की क्या इच्छा है ? इस पर माताजी ने कहा--श्री स्वामीजी महाराज के हवन कुण्ड की विभूति, श्रीसर्वेश्वर प्रभु का चरणोदक और हो सके तो श्री श्रीजी महाराज के दर्शन । यह बात सुन कर श्रीब्रजमोहनजी ने तुरन्त फोन पर जाकर फोन द्वारा महाराजश्री से प्रार्थना करते हुए निवेदन किया कि भगवन् ! दास के माताजी की इच्छा है अन्त समय में श्रीचरणों के दर्शन कर लूं । अगर कृपा दृष्टि कर हमारे घर श्रीचरणों का पादार्पण हो जावे तो मैं कृतार्थ हो जाऊँगा ।

इस प्रकार दुःख भरी आवाज सुनकर श्रीपरमदयालु महाराजश्री ने फरमाया तुन अब धैर्य करो अभी हम आ रहे हैं उसी समय आचार्यश्री प्रस्थान कर रात्रि ६ बजे कुचामन पहुँचे। उस समय बिमारी के कारण उनकी यह हालत थी कि कण्ठ से एक बूँद पानी नहीं उतर रहा था । सोना, बोलना, दवा लेना आदि सब कार्य बन्द हो रहे थे । डाक्टर का कहना था कि कोई बिमारी पकड़ में नहीं आ रही है । इनके एक बीमारी नहीं है कई बिमारियां बन गई हैं किन्तु हर्ष का विषय तो यह था कि ज्योंही महाराजश्री के दर्शन कर उनके द्वारा प्राप्त श्रीस्वामीजी महाराज की विभूति और श्रीसर्वेश्वर प्रभु का चरणामृत पिलाया तो उनकी सारी बिमारियां समाप्त हो गयीं । बिमार स्वयं उठकर महाराजश्री से वार्तालाप करने लगी । महाराजश्री के विराजते-विराजते ही एक डाक्टर साहब भी आ गये देखा तो कहा इस

स्व० भक्तिमती श्रीसरजूबाई छापरवाल

रिड़–कुचामन, जि० नागौर (राज०)

आपकी पुण्य स्मृति में श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी (श्रीस्वामीजी) महाराज के चमत्कार नामक इस पुस्तक की प्रकाशन सेवा आपके भ्राता श्रीरामकरणजी प्रकाशजी बाहेती एवं सुपुत्र श्रीबृजमोहनजी नटवरगोपाल छापरवाल ने की है जो परम अनुकरणीय है।

समय तो ठीक है कोई बिमारी नहीं । जिस स्थान पर कुछ समय पहिले दुःख का वातावरण फैल रहा था, वहाँ महाराजश्री का पादार्पण होते ही बिमार के परिवार के लोगों के मुख प्रसन्नता से खिल उठे । जो बिमार १० दिन नींद न ले सका उसने दो पुड़ी प्रसाद पाकर सुख पूर्वक नींद ली । यह है श्रीस्वामीजी महाराज के हवन कुण्ड की विभूति और श्रीसर्वेश्वर प्रभु के चरणामृत एवं श्रीआचार्य चरणों के दर्शन तथा शुभाशीर्वाद का प्रत्यक्ष चमत्कार ।

आगे और भी मनन करिये--भक्तवर श्रीरामनिवासजी लखोटिया (अजमेर) की धर्मपत्नी श्रीमती भगवद्दासी (बाया बाई) द्वारा संप्राप्त कतिपय चमत्कारों का दिग्दर्शन---

(१७) भक्तवर श्रीगोपालकृष्णजी सेठी जालना वालों की शादी हुये ७ साल हो चुके थे, किन्तु कोई सन्तान नहीं हुई तब घर वालों को चिन्ता होने लगी । विशेष कर कृष्ण मंजरी (धर्मपत्नि-श्रीगोपालकृष्णजी सेठी) की माता को चिन्ता रहने लगी, वह हर समय यही कहती थी कि न जाने मेरे भाग्य में इसके सन्तान देखना लिखा है या नहीं । जब ऐसा सुना तो श्रीगोपालकृष्णजी की बहिन भगवद्दासी बायाबाई (धर्मपत्नी-श्रीरामनिवासजी लखोटिया अजमेर) ने कहा कि चलो श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, वहाँ श्रीस्वामीजी महाराज के दरबार में सन्तान हेतु प्रार्थना करें । गोपालकृष्ण और कृष्णामंजरी

इन दोनों को साथ लेकर पुष्कर आई। स्नान करके श्रीस्वामीजी महाराज की समाधि का पूजन किया। वैशाख का महिना था उन दिनों वर्तमान जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज भी पुष्कर ही विराज रहे थे। वैशाख शुक्ल चतुर्दशी का दिन था आचार्यश्री का भी चरण पूजन कर शुभाशीर्वाद ग्रहण किया। श्रीस्वामीजी महाराज की परम कृपा से आगे आने वाले चैत्र कृष्णा ६ को ही बालक का जन्म हुआ। जब बालक एक साल का हुआ तो पीठ में आकर पूजन व राजभोग सेवा की। वह अब ३२ वर्ष के हैं। उनका नाम श्रीजुगलकिशोरजी है। उनके नाम से ही दुकान है, दुकान के फर्म का नाम जुगलकिशोर एन्ड कम्पनी जालना है। भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु, श्रीस्वामीजी महाराज एवं आचार्यश्री की परम कृपा तथा शुभाशीर्वाद से सब प्रकार का आनन्द है।

(१८) इन्हीं श्रीगोपालकृष्णजी की श्रीस्वामीजी महाराज के चरणों में दृढ निष्ठा हो जाने के कारण इनका अब ऐसा नियम है कि स्नान करने के पश्चात् श्रीस्वामीजी महाराज की विभूति का प्रसाद लेकर ही घर से बाहर निकलते हैं तथा दुकान खोलते हैं। एक बार स्कूटर पर से बड़ी बुरी तरह से गिरे। स्कूटर का तो चूरा-चूरा हो गया पर आप श्रीस्वामीजी की कृपा से बाल-बाल बच गये। मित्रों ने सुना तो तुरन्त अस्पताल पहुँचे। वहाँ पर मालुम हुआ कि यहाँ तो अभी तक

कोई केस नहीं आया है । उनको विश्वास नहीं हुआ, सोचा कि कहीं गोपाल के अधिक चोट आई है, किसी से बोल-चाल मिलना-जुलना बन्द है । पुनः पूछा डाक्टर सा. केवल हमें मिलना है हम अधिक बात नहीं करेंगे । इस पर डाक्टर साहब ने कहा यदि आपको विश्वास नहीं है तो यह अस्पताल है सर्वत्र जाकर देख लो । देखने पर नहीं मिले तो वे लोग घर पता लगाने को आये । घर पर गोपालजी घूम रहे थे केवल थोड़ी रगड़क शरीर में आई थी । मित्रों ने कहा--गोपाल तेरे स्कूटर की दशा देख कर तो आज हमें यह पूर्ण निश्चय हो रहा है कि श्रीस्वामीजी महाराज ने तेरी रक्षा की है ! उन्हीं श्रीगुरुदेव का यह प्रत्यक्ष चमत्कार है सो तू बाल-बाल बच गया ।

(१६) एक ओसवाल सज्ञन जो जालना के ही हैं । चुनाव के दिनों में एक बार गोपाल से कहा कि पूज्य गुरुदेव से मेरे लिये प्रार्थना कर जिससे मेरी विजय हो जाय । गोपाल ने कही कि भैया ! मैं तो कुछ जानता नहीं मुझे तो एक श्रीस्वामीजी महाराज के चरणों का आश्रय है । घर चलो वहाँ उनके मंगलमय चित्रपट के दर्शन हैं, उनसे प्रार्थना करो, वे घर आये और श्रीस्वामीजी महाराज से प्रार्थना करके गये व भगवत् कृपा से विजयी हो गये, पुनः घर पर आये और ५१) रु० भेंट कर के गये । गोपालजी ने वह भेंट अपनी बहिन भगवद्दासी के साथ श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ भेज दी ।

(२०) इन्हीं गोपालकृष्णजी की सास चन्द्रभागाबाई जालना को उनकी भूवाजी ने एक खेत दिया । भूवाजी के परमधाम वास हो जाने के पश्चात् उनके कुटुम्ब वालों ने उन्हें अधिकार में लेने नहीं दिया और कहा कि खेत की तरफ कोई आँख उठाकर नहीं देख सकता । अब वह बेचारी क्या करती। श्रीस्वामीजी महाराज से प्रार्थना की, भगवत्कृपा से निर्णय होकर उनको खेत के १० हजार रुपये प्राप्त हुये । उसने श्रीस्वामीजी महाराज के यहाँ श्रीपुष्करराज में आकर पूजन की और राजभोग सेवा भी की ।

(२१) श्रीगणपतराजजी दरगड़ के सन्तान में ६ लड़-कियां थी । श्रीस्वामीजी महाराज की आराधना से ही ७ वां पुत्र हुआ ।

(२२) इसी प्रकार हरिजी झंवर मदनगंज वालों के भाई की लड़की नाम विमला बाई के ५ लड़कियां थी । उसने भी श्रीस्वामीजी महाराज की पूजन कराई तो उसको भी पुत्र की प्राप्ति हुई ।

(२३) श्रीओमप्रकाशजी व सरजूबाई ईनाणी अजमेर ने श्रीस्वमीजी महाराज के दर्शन कर उनसे मन ही मन में प्रार्थना की---हे ! श्रीस्वामीजी महाराज ! तीन लड़किया ही

लड़कियां हैं । सगाई कठिनता से होगी क्योंकि लड़कियों के भाई नहीं है सो आप जानो । अगले पाटोत्सव पर जब वह आई तो बालक होकर २ महिने का हो गया था । अब वह नियम से प्रति पाटोत्सव पर स्वामीजी महाराज के यहाँ बालक को प्रणाम कराने हेतु साथ में लेकर आती है । तथा प्रेम पूर्वक यथाशक्ति भेंट पूजा करके जाती है ।

(२४) श्रीसत्यनारायणजी बाहेती ब्यावर जो कि श्रीरामनिवासजी दरगड़ मदनगंज वालों के बहनोई तथा बाया बाई (धर्मपत्नी-श्रीरामनिवासजी लखोटिया अजमेर) के मामा के बेटे भाई हैं । ये कट्टर आर्य समाजी विचारों के थे । इनके भी ६ लड़कियां थी । आखिर जैसे तैसे सदाकुँवर बाई दरगड़ ने आचार्यपीठ में लाकर श्रीस्वामीजी महाराज के दर्शन कराये । श्रीशंकरलालजी व्यास द्वारा पूजन करवाई । वह शरद् पूर्णिमा का दिन था । श्रीस्वामीजी महाराज की कृपा से जब दूसरी शरद् पूर्णिमा आई तो बालक होकर १० दिन का हो गया था । फिर एक बालक प्रभु की कृपा से और हुआ । श्रीसत्यनारायणजी ने आचार्यश्री से दीक्षा ग्रहण की । अब श्रीस्वामीजी के प्रति इनकी पूर्ण आस्था है ।

(२५) १८ वर्ष पहिले जालना से कृष्णमंजरी (धर्म-पत्नी-श्रीगोपालकृष्णजी सेठी) व ललिता तथा जुगलकिशोर

जी सहित झूला के दर्शन करने हेतु श्रीपुष्करराज आये थे और श्रीपरशुरामद्वारा में ठहरे थे । भाद्रपद कृ० १ के दिन प्रातः श्रीठाकुरजी के व श्रीस्वामीजी महाराज के सामने चौक में भक्तवर श्रीभागीरथजी भराड़िया सैन्धवा १०-१५ व्यक्तियों को साथ लेकर भगवन्नाम संकीर्तन कर रहे थे । उधर श्रीकृष्ण-मंजरी घाट पर सब बालकों को लेकर बैठी हुई स्नान करा रही थी । श्रीपुष्करराज का जल भी मन्दिर के दरवाजे तक लहर ले रहा था । ललिता (छोटी बालिका) उसकी मां के पीछे से जाकर श्रीपुष्करराज में शिर भिगोते समय डूब कर बहने लगी। उसे देख कर मां भी उसको पकड़ने के लिये कूद पड़ी और उसे पकड़ा, पर दोनों ही गोते खाने लगी । तब वही बालक जुगलकिशोर जो श्रीस्वामीजी महाराज के कृपा प्रसाद से ही प्राप्त हुआ था दौड़कर भीतर गया और अपने फूफाजी श्रीरामनिवासजी लखोटिया से कहा कि ललिता व मां तो डूब गये । तब वे तेजी के साथ भागकर गये तो दोनों ही बहते हुये दूर दिखाई पड़े । तुरन्त कूद कर जैसे तैसे निकाला । फिर भीतर कीर्तन स्तुति करने वालों को पता चला, वे भी भागकर गये । देखा कि बालिका तो इतनी बेहोश है मालूम पड़ता है १-२ मिनट में ही खत्म होने वाली है । मां के पेट में पानी भर गया था वह निकाला । कुछ समय तक उसकी तबियत तो खराब रही, किन्तु वह बालिका तो २-३ मिनट बाद ही उठकर खेलने लगी, हँसकर बात-चीत करने लगी जैसे उसको कुछ

हुआ ही नहीं । सभी आश्चर्य करने लगे । लड़की से पूछने लगे तुझे किसने बचाया । तब वह श्रीस्वामीजी महाराज के चित्रपट की ओर संकेत करती हुई कहने लगी कि इनने ही मुझे गोद में लेकर बचाया । पुजारी श्रीरामचन्द्र ने भी आश्चर्य करते हुए कहा यह श्रीस्वामीजी महाराज की ही कृपा है । अभी कुछ दिन पहिले भी केसरगंज अजमेर का एक शादीशुदा नवयुवक लड़का वाराह घाट पर डूब गया था । उसे भी बड़ी भयंकर स्थिति में श्रीस्वामीजी महाराज ने बचाया । इनकी महिमा बड़ी अपार है । भादवा कृष्णा ४ को निम्बार्काचार्यपीठ आये । दूसरे दिन श्रीस्वामीजी महाराज का पाटोत्सव था । श्रीस्वामीजी महाराज की पूजा एवं भेंट समर्पण की । आचार्यश्री से भी इस घटना की चर्चा की तो महाराजश्री भी आश्चर्यान्वित होकर कहने लगे कि यह सब श्रीस्वामीजी महाराज की ही परम कृपा है । सायंकाल सन्ध्या आरती होने पर स्तुति-संकीर्तन वाली सभा में श्री श्रीजी महाराज ने इस विषय पर श्रीसन्तजी से प्रवचन कराया और उस ४ साल की छोटी बालिका को खड़ी कराके सबको बतलाया । इस ४ साल की बालिका को किसने सिखाया कि मुझे इन महाराज ने बचाया । इस सत्य घटना पर सभी भक्त आश्चर्य करने लगे और बड़े जोर से श्रीस्वामीजी महाराज की जयकार की । इस जयघोष के साथ ही वह सभा विसर्जित हुई ।

(२६) एक बार श्रीगोपालकृष्णजी सेठी ने अपनी पत्नी कृष्णामंजरी से कहा कि श्रीस्वामीजी महाराज के यहाँ दर्शनार्थ चलना है ? कृष्णामंजरी ने कहा कि मैं नहीं चलूँगी, आप चले जाना। उसी रात वह सपने में क्या देखती है कि मैं जल में डूब रही हूँ और श्रीस्वामीजी महाराज ही बचा रहे हैं । जब यह बात प्रातःकाल उसने अपने पति से कही तो श्रीगोपालकृष्णजी सेठी ने कहा मना क्यों किया कि मैं नहीं चलूँगी । दोनों ने ही आकर श्रीस्वामीजी महाराज के दर्शन व पूजन किया । तब से यह बराबर पाटोत्सव पर आते हैं ।

(२७) सदाकुंवर बाई दरगड़ मदनगंज ने अपनी पुत्र-वधू व पुत्री विमला को श्रीस्वामीजी महाराज के लेजाकर पूजन करवाई कि इनके एक-एक पुत्र तो है एक-एक और हो जावे, ऐसी कृपा करें । श्रीस्वामीजी महाराज की कृपा से इन दोनों के ही आज एक-एक और बालगोपाल हैं ।

(२८) श्रीश्यामजी लखोटिया अजमेर के दो सुपुत्रियां थी । शरद् पूर्णिमा पर पुष्कर जाकर श्रीस्वामीजी महाराज की पूजन कर पुत्र-कामना की सो पुत्र हुआ । वह अब १४-१५ आयु का है, नाम है विपिनकुमार । एक बार साईकिल इसके ऊपर गिर पड़ी, पर श्रीस्वामीजी महाराज ने बाल-बाल बचाया । श्याम व उनकी धर्मपत्नी ने तत्काल पुष्कर जाकर

श्रीस्वामीजी महाराज को प्रणाम करवा यथाशक्ति भेंट पूजा की ।

(२९) रामस्वरूपजी करवा अजमेर की सुपुत्री नाम-सरोज बाई, शरीर का रंग थोड़ा सांवला था, इस कारण सम्बन्ध (सगाई) में बड़ी कठिनाई हो रही थी । लगभग ४ साल फिरते-फिरते तंग हो गये । जाने आने में ५-६ हजार रुपये भी पूरे हो गये । एक बार श्रीरामनिवासजी लखोटिया की धर्मपत्नी श्री बाया बाई ने उनसे श्रीस्वामीजी महाराज के सम्बन्ध में चर्चा चलाई । लड़की की माँ तो उसके सामने रोने लगी । देखो २४ साल की हो गई अभी तक कोई योग नहीं बैठा, न जाने कवांरी ही रहेगी क्या ? अब आप कहो सोही करने को तैयार हैं ।

उस लड़की को ले जाकर श्री बाया बाई ने श्रीस्वामीजी महाराज का पूजन करवाया और प्रार्थना की । ठीक ४ मास पश्चात् ही श्रीस्वामीजी महाराज की कृपा से २० रोज में ही सगाई और ब्याह इन दोनों कार्यों से निवृत्त हो गये । घर-वर भी अच्छा मिल गया । तब से करवा परिवार को श्रीस्वामीजी महाराज के चरणों में अटल श्रद्धा व पूर्ण विश्वास हो गया ।

(३०) श्रीराधामोहनजी बाहेती मदनगंज वालों के भी जब सन्तान नहीं थी । अवस्था भी लगभग ३४ साल की हो गयी थी तब श्रीसरजूबाई छापरवाल कुचामण निवासी ने

श्रीस्वामीजी महाराज की आराधना करवाई थी । श्रीस्वामीजी महाराज की कृपा से इनके एक लड़का और एक लड़की है ।

(३१) श्रीगोपालजी सेठी जालना वालों की सुसराल में ही एक लड़का आवारागर्दी में था । उसके बड़े भाई ने श्रीकृष्णामंजरी सेठी के साथ इधर भेजा, वह इसलिये कि यह जैसे--तैसे सुधर जाय । उसको फाल्गुन में श्रीनिम्बार्कतीर्थ लाकर श्रीस्वामीजी महाराज की पूजन करवाई और आचार्यश्री से दीक्षा भी दिलवाई । अभी जन्माष्टमी पर जब श्रीगोपाल-कृष्णजी सेठी आये तब कह रहे थे कि अब वह बम्बई में अच्छी तरह काम-काज कर रहा है ।

(३२) बड़े महाराज श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज व पुजारी श्रीरघुनाथदासजी के समय में मारवाड़ के एक श्रीपृथ्वीराजसिंहजी राजपुरोहित चलते फिरते श्री निम्बार्काचार्यपीठ आ गये । नेत्रों से पूरी तरह दिखाई नहीं पड़ता था, उनको भगवान् के यहाँ सोहनी सेवा पर नियुक्त कर लिया । श्रीपुजारीजी महाराज ने उनके नेत्रों में विकार देख कर कहा कि आप तो आखों पर श्रीस्वामीजी महाराज की विभूति लगावो । वह भी श्रद्धा पूर्वक लगाने लगे । थोड़े ही दिनों में नेत्र अच्छे हो गये । साफ-साफ दीखने लगा । यह है श्रीस्वामीजी महाराज के चरणों में श्रद्धा पूर्वक आस्था रखने का प्रत्यक्ष चमत्कार ।

(३३) स्वामी श्रीकन्हैयालालजी संचालक श्रीसर्वेश्वर रास मण्डल वृन्दावन लिखते है--

मुझे जब श्रीगुरुदेव (बड़े श्री श्रीजी महाराज) ने दीक्षित कर यह आज्ञा दी कि नित्य प्रातःकाल उठते ही श्रीसर्वेश्वर श्रीराधामाधवजी का ध्यान करते हुए श्रीस्वामीजी महाराज की वन्दना करना । जीवन में जब कभी कोई संकट आवे तो श्रीस्वामीजी महाराज से प्रार्थना करना वे अवश्य ही सहायता करेंगे । यही साधना मेरी तब से चल रही है ।
ऐसे मेरे जीवन में दो अवसर उपस्थित हुये ।

१--खेत की चकबन्दी और २--पुत्रवधू की प्राप्ति ।

१--चकबन्दी के समय एफशियो साहब ने मेरे खेत की चक गलत कर दी । इस पर बहुत अनुनय विनय करने पर भी सुनाई नहीं की । तब मैंने वहीं श्रीगुरुदेव के आदेश का पालन किया । अर्थात् श्रीस्वामीजी महाराज का ध्यान धर कदम उठाया तो श्रीशियोजी साहब ने सुनाई कर मेरे खेत की ऐसी चकबन्दी करदी कि गाँव में पैसा खर्च कर करवाने वालों की भी नहीं हुई ।

२--मेरे पुत्र की लगभग १०-१५ स्थानों से सगाई आई । मैंने सोचा कहाँ और कौन से स्थान की लड़की लाऊ जो सुशील और सदाचार परायण तथा घर के काम काज में कुशल हो, ऐसी स्थिति में मैंने श्रीस्वामीजी महाराज का ही ध्यान किया तो स्वप्न में आदेश हुआ कि अमुक स्थान की कन्या लावो । मैंने वैसा ही किया । आज घर में सर्वानन्द है । यह है श्रीस्वामीजी महाराज की कृपा का ही सत्फल ।

(३४) डा० श्रीरामप्रसादजी शर्मा एम. ए. पी. एच. डी. प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय किशनगढ जिन्होंने श्रीपरशुराम-सागर पर शोध कर पी. एच. डी. की डिग्री प्राप्त की है-वे अपनी अनुभूति इस प्रकार लिख रहे हैं--

मुझे मेरे अति संघर्ष ग्रस्त विद्यार्थी जीवन में किशनगढ के जाने माने श्रेष्ठी श्रीघीसूलाल बजाज की गवाक्ष भीत्ति पर अंकित निम्न दोहे से स्वामीजी श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के यशस्वी व्यक्तित्व के प्रति एक अलौकिक अनुभूति हुई थी । वाणी में निहित सिरजनहार दर्शन से मुझे अपूर्व आत्मबल मिला तथा प्रस्तुत वाणीकार श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी सर्व प्रथम मेरे आराध्य बनकर भावना में विराज गये ।

माया सगी न मन सगो, सगो न यह संसार ।
परशुराम या जीव को, सगो है सर्जनहार ।।

श्रीस्वामीजी महाराज की इस दिव्य वाणी ने ही मुझे अपनी ओर आकर्षित किया तभी तो सन् १६५८ में एम. ए. पास करते ही **श्रीपरशुरामदेव साहित्य शोध** का मन में दृढ संकल्प हुआ किन्तु आर्थिक समस्या और जीवन की विषमताओं में मेरे इस दिवा स्वप्न को पूज्य चरणों के चमत्कारों ने साकार कर दिखाया । उन्हीं की परम कृपा से शोध सम्बन्धी सभी साधनों की यथासमय उपलब्धि होते हुए सन् १६६३ में पी. एच. डी. की डिग्री प्राप्त हो गई ।

यथावकाश शोध ग्रन्थ का प्रकाशन और सनातन धर्म सम्मेलन में विमोचन भी हो गया । यह सब श्रीस्वामीजी महाराज की कृपा का ही दिव्य प्रभाव है ।

सनातन धर्म सम्मेलन की ही बात है, जब कि मैं श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में ही सेवा कार्य में रत था, उस समय घर से सूचना मिली कि बच्ची अस्वस्थ होकर बेहोश होगई है । मैं आचार्यश्री से आज्ञा लेकर चला और मार्ग में श्रीस्वामीजी महा-राज से प्रार्थना कर रहा हूँ कि पुत्री स्वस्थ हो हँसती हुई मिले। ऐसी ही कृपा हुई । बच्ची हँसती हुई दौड़ कर मिली और प्रसाद लिया, यह है श्रीस्वामीजी महाराज का चमत्कार । अतः मेरा तो यही अटूट विश्वास है---

गुरु गंगाजल कल्पतरु, निर्मल ज्यों हरि नांऊँ ।
परशुराम गुरुदैव पै, वार वार बलि जांऊँ ॥

जब कभी कोई संकट कालीन बात आती है तो मैं श्रीचरणों में ही प्रार्थना करता हूँ वह तत्काल पूर्ण हो जाती है।

(३५) श्रीस्वामीजी महाराज की विभूति के चमत्कार का वर्णन करते हुए भक्तवर श्रीभगवानदासजी गार्गीया चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट ब्यावर से लिखते हैं--

अक्टूबर १९८२ के अन्तिम सप्ताह में मेरा स्वास्थ्य खराब हो गया । डाक्टरों द्वारा निरन्तर उपचार होते रहने पर भी ४ नव. १९८२ को मेरे स्वास्थ्य की स्थिति बहुत बिगड गई तथा ६ नव. कार्तिक कृष्णा ६ को तो स्थिति इतनी गम्भीर हो गई कि अजमेर एवं ब्यावर के होशियार अनुभवी चिकित्सकों के आवश्यक प्रयासों एवं विशेष दवाओं से भी मेरे स्वास्थ्य में किंचित् मात्र भी सुधार नहीं हुआ । आठ दस दिनों से नींद भी नहीं आती थी । चिकित्सकों की राय थी कि यदि मुझे कुछ घन्टे प्राकृतिक नींद आ सके तो कुछ लाभ की आशा हो सकती

है, नींद की दवा देने से खतरे की अधिक सम्भावना थी, प्रयास सभी असफल हो रहे थे । बेहोशी की स्थिति से सभी परिवार को अनहोनी चिन्ता होने लगी । अतः ६ नवम्बर को ११॥ बजे आचार्यपीठ पूज्य आचार्यश्री को टेलीफोन करवाया, लेकिन बात नहीं हो सकी, पुनः २॥ बजे टेलीफोन किया तो ज्ञात हुआ कि आचार्यश्री ब्यावर के लिए रवाना हो चुके हैं । अजमेर होते हुए सायंकाल आचार्यश्री का दास के यहाँ पधारना हुआ, लगभग २०० भक्तजनों की उपस्थिति में आचार्यश्री ने आकर दर्शन दिए । उस तेजस्वी मुख मण्डल के दर्शन कर मुझे चेतना हुई, तब मैंने कहा--भगवन्! मेरे लिए आपको यहाँ तक पधारने का कष्ट करना पड़ा ? आचार्यश्री ने भगवान् का तुलसी प्रसाद, चरणामृत एवं श्रीस्वामीजी महाराज की विभूति दी और आदेश किया कि यह प्रसाद लेकर आप सो जावें । सब ठीक हो जायेगा। वैसा ही हुआ, श्रीस्वामीजी महाराज की विभूति प्रसाद लेते ही मुझे तुरन्त आरामदायक नींद आ गई । उपस्थित सभी भक्त-जन देखते ही रह गए । प्रत्यक्ष चमत्कार आश्चर्यजनक था । रात्रि में आचार्यश्री का वापस आचार्यपीठ पधारना हो गया । लगभग १४ घन्टे की गहरी नींद लेने के पश्चात् जब प्रातःकाल मैं उठा तो स्वास्थ्य में ७५% का सुधार हो चुका था । धीरे-धीरे कुछ ही दिनों में मुझे पूर्ण स्वास्थ्य लाभ हो गया । स्वयं चिकित्सकों ने स्वीकार किया कि दवाओं ने नहीं बल्कि आचार्य-श्री के दर्शन प्रसाद एवं श्रीस्वामीजी महाराज की विभूति ने ही मुझे जीवनदान दिया है ।

(३६) इसी प्रकार इस ग्रन्थ के लेखक का कनिष्ठ पुत्र श्रीदेवकीनन्दन शर्मा भी गत वर्ष अस्वस्थ हो गया था । ज्वर, पीलिया, वमन, इंजेक्शन का पकाव तथा उन्माद आदि कई एक ब्याधियों ने एक साथ घेर लिया । स्थिति गम्भीर हो गई थी । ऐसी हालत में श्रीस्वामीजी महाराज से प्रार्थना की गई । थोड़े ही दिनों में सब रोग निवृत्त हो गए और आज भगवत्कृपा से पूर्ण स्वस्थ है । यह है श्रीस्वामीजी महाराज की कृपा का चमत्कार है ।

(३७) श्रीनिम्बार्क के सह–सम्पादक एवं गुर्जरगौड़ सन्देश के प्रबन्ध सम्पादक श्रीभँवरलालजी उपाध्याय ब्यावर से श्रीस्वामीजी महाराज की प्रत्यक्ष अनुभूति का वर्णन करते हुये लिखते हैं--

सन् १९७६ के मार्च मास में आँखों के आपरेशन के लिए मुझे जयपुर जाना पड़ा, वहाँ इस इलाज में मुझे करीब एक मास से अधिक का समय लग गया । इधर ग्रहों के प्रकोप से कहें या पूर्व नियोजित षडयन्त्रवश मेरा ब्यावर स्थित प्रसिद्ध मुद्रणालय जिसमें लगभग छोटे-मोटे पच्चीस व्यक्ति कार्यरत थे अचानक बन्द हो गया । स्थिति बड़ी विचित्र थी, पैसा पास में नहीं,उधार लेनदारों का तकाजा अलग,ऐसे समय में श्रीसर्वेश्वर प्रभु का स्मरण ही केवल एक मात्र आश्रय था । निरन्तर प्रभु से आई इस विपत्ति के निवारण हेतु प्रार्थना चलती रही । कुछ दिनों में ही प्रभु की ऐसी असीम कृपा हुई कि उन्होंने मुझे स्वयं अपने ही चरणों में आश्रय दिया और आचार्यपीठ में ही पूज्य आचार्यचरणों की सेवा का अवसर प्रदान कर दिया । यहाँ

आचार्यपीठ में श्रीस्वामीजी महाराज के दर्शन कर मुझे परम शान्ति का अनुभव हुआ ।

इस संकट के समय में अलग-अलग आचार्यपीठ में रहते हुए पारिवारिक शेष कार्यों को पूर्ण करने का जो पूर्व मानसिक संकल्प बना हुआ था उसकी पूर्ति के लिए श्रीस्वामीजी महाराज के चरणों में मेरी याचना चलती रही । इसी बीच अद्‌भुत चमत्कार हुआ, और अपनी एक दौहित्री एवं एक छोटे बच्चे का विवाह संस्कार जो उस संकट के समय में सम्पन्न करने में मैं असमर्थ था, वह भी श्रीस्वामीजी महाराज की असीम कृपा से प्रतिष्ठित परिवारों में बिना किसी कठिनाई के पूर्ण हो गये । यह सब इन्हीं की लीला थी । कहां से कैसे व्यवस्था हुई उस पर जब कभी विचार करता हूँ तो अनायास ही श्रीस्वामीजी महाराज के चरणों में नत मस्तक हुए बिना नहीं रहा जाता । ऐसे ही ये लीलाधारी हैं श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में पूर्ववत् विराजित श्रद्धास्पद श्रीस्वामीजी महाराज ! जिनके दर्शन कर भक्तजन कृतकृत्य हो जाते हैं ।

(३८) **भक्तवर श्रीरामकरणजी बाहेती**--दि० १७ मार्च १९७७ में सूरत में अस्वस्थ हो गये थे । हार्ड अटेक की बीमारी थी । गम्भीर स्थिति होने पर सूरत अस्पताल में भरती कराए गए । सभी रिस्तेदारों तथा सम्बन्धित फार्मों को खबर मिली तो सभी लोग मिलने व भेंट करने आने लगे ।

उन दिनों जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज कलकत्ता विराज रहे थे, श्रीचरणों को भी बीमारी की सूचना दी गई । वहाँ से दि० २८ मार्च को सूरत श्रीसर्वेश्वर कम्पनी के

पते पर स्वास्थ्य लाभ के लिए मङ्गल कामना हेतु आपश्री का तार पहुँचा । दिन के ४ बजे तार पहुँचते ही अस्पताल में आपको तार पहुँचने की सूचना दी गई । तार को देख कर आपने डाक्टर से रिपोर्ट मंगाई, देखा तो रिपोर्ट में था कि दिन के ४ बजे जो हिचकी की शिकायत थी वह बन्द हो गई अतः अब स्वास्थ्य में सुधार है । ४ बजे तार आना और ४ बजे ही रोग में परिवर्तन होकर सुधार होना, यह श्रीस्वामीजी महाराज एवं आचार्यश्री के शुभाशीर्वाद का प्रत्यक्ष चमत्कार था ।

(३६) **श्रीरामप्रतापजी शर्मा मु० पो० कीलपुर खेड़ा**–वाया रैनी, जि० अलवर के सुपुत्र जो राजकीय प्राथमिक चिकित्सालय में चिकित्सक पद पर सेवारत हैं, श्री-निम्बार्कतीर्थ ही रहते थे उन्होंने अपने पिता (श्रीरामप्रतापजी) को यह पत्र लिखा कि श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) स्थित श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में आषाढ शुक्ल पक्ष में पाक्षिक सत्सङ्ग होने जारहा है, अच्छे-अच्छे उपदेशक महात्मा पधारेंगे और आचार्यश्री के सदुपदेश होंगे । श्रीसर्वेश्वर और राधामाधव के दर्शन तथा सत्सङ्ग का लाभ, बड़ा आनन्द रहेगा, आप आना चाहें तो अवश्य पधारें । यह १५-१६ वर्ष पहले की बात है ।

पुत्र का पत्र जाते ही वे खेत में काम कर रहे थे ऐसी उत्सुकता लगी कि-सारा काम छोड़ कर घर जाना भी भूल गए, गाड़ी का टाइम था सीधे ही स्टेशन पहुँचे । जेब में किराया नहीं, बिना टिकिट ही गाड़ी में बैठ गए । टिकिट चेकर तीन बार उधर आये, पास वालों से टिकट मांगे पर इनसे कुछ पूछा ही नहीं । अस्तु अजमेर पहुँच कर जब फाटक से बाहर होने

लगे तो कुर्ता के जेब में हाथ डाला तो पता नहीं कहां से उनको जेब में टिकट मिल गया तथा बाहर आ गये । अब अजमेर से सलेमाबाद पहुँचने का क्या साधन था ? सामने देखते हैं तो एक ५) रु० का नोट पड़ा है उसे लेकर आनन्द से मोटर में बैठ गए और सलेमाबाद आगए । एक दिन सत्सङ्ग में बैठे, पुत्र से कहा क्या करूँ अवसर तो बहुत अच्छा है आनन्द आता है, पर कानों से सुनाई नहीं पड़ता चिन्ता से आत्मा दुःख पाती है । किसी भावुक भक्त के कहने पर तीसरे दिन भगवान् की मङ्गला आरती के दर्शन कर श्रीस्वामीजी महाराज की वन्दना और उनकी धूनी की प्रसादी लेकर श्रीनिम्बार्कतीर्थ में स्नान किया तो आंखों में अच्छी ज्योति आगई और कानों से सुनाई देने लगा तथा खाँसी, कफ इतना था कि चैन नहीं लेने देता था वह न जाने एकदम कहाँ विदा हो गया । बड़े प्रसन्न होकर आए । महाराजश्री से निवेदन किया । सभा में खड़े होकर सबके सामने यह श्रीस्वामीजी महाराज का अद्भुत चमत्कार सब को सुनाया । यही है श्रीस्वामीजी महाराज की कृपा और दिव्य चमत्कार ।

*

* श्रीपरशुरामदेवाचार्यस्तवः *

कण्ठेऽस्ति यस्य सनकादिमुनीन्द्रसेव्यः
सर्वेश्वरः शरणदः शरणागतानाम् ।
हस्ताम्बुजे जपवटी, हृदि मन्त्रराजस्तं
सर्वदा परशुरामगुरुं नमामि ॥१॥

यः प्राप्तवान् हरिगुरुं शरणं शरण्यं
यश्चोद्दधार मरुधन्वनि जीवमात्रम् ।
निम्बार्कपीठ--समधिष्ठित---पादपद्मं
तं सर्वदा परशुरामगुरुं नमामि ॥२॥

योऽत्राजयद् यवनसाधुमसाधुमाशु
व्यस्मापयच्च निजदिव्यबलैर्नृपेन्द्रान् ।
प्राहर्षयद्धरिपदाब्जमधुव्रतान् य-
स्तं सर्वदा परशुरामगुरुं नमामि ॥३॥

यः सागरं विविधसूक्तिरसं सुरम्यं
संसार-सिन्धु-तरणं मधुरं विचित्रम् ।
सद्भक्तिरत्न-भरितं व्यतनोत् स्वनाम्ना
तं सर्वदा परशुरामगुरुं नमामि ॥४॥

सद्यो विहाय भववैभवचिन्हजातं
नागाद्रिमेत्य सकलेश्वरमर्चयन् यः ।
भूयऽभिवृद्धविभवोऽभवदर्च्यपादं
तं सर्वदा परशुरामगुरुं नमामि ॥५॥

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विरचित

श्रीपरशुरामसागर से उद्धृत कतिपय पद

(१)

गोविन्द ! मैं बन्दीजन तेरा ।
प्रात समय उठि मोहन गाऊं, तो माने मन मेरा ॥
कृत्य कर्म मर्म कुल करणी, ताकि नाहिन आसा ।
तेरा नाम लियाँ मन मानें, हरि सुमिरण विस्वासा ।।१॥
करूँ पुकार द्वार शिर नाऊं, गाऊं ब्रह्म विधाता ।
परशुराम जन करत वीनती, सुनि प्रभु अविगति नाथा ॥२॥

(२)

हरि सुमिरन विन तन मन झूंठा ।
जैसे फिरत पशु खर शूकर, उदर भरत इन्द्र भ्रमि बूठा ॥
अकरम करम करत दुख देखत, मध्यम जीव जगत का झूठा।
निर्धन भये श्याम धन हार्यो, माया मोह विषै मिलि मूठा ॥
हरि सुमिरन परमारथ पति विन, जमपुर जात न फिरत अनूठा
परशुराम तिनसों का कहिये, जो पारब्रह्म प्रीतम सो रूठा ॥

(३)

जो जन सांचे गोविन्द ही गावै ।
अष्ट सिद्धि नव निद्धि सकल सुख, घर ही बैठो पावै ॥टेक॥
काम क्रोध अभिमान चातुरी, तृष्णा चित न डुलावै ।
संसौ कहा पर्म पदई कौ, उधरत वार न लावै ॥१॥
माया मोह लोभ दुख पूरण, कलियुग घोर कहावै ।
परशुराम प्रभु सौं मन मानैं, तौ दुख मैं काहे कौ आवै ॥२॥

* श्रीपरशुराम जयन्ती बधाई पद *

(१)

आज महा मंगल भयो माई ।
प्रकटे श्री परशुराम महा सुन्दर, सन्तन के सुखदाई ।।
नव निकुञ्ज श्री प्रेम मञ्जरी, दम्पति अति मन भाई ।
श्रीगोविन्द देव मम स्वामिनी, रस वरषा वरसाई ।।

(२)

आज बधाई मङ्गल चार ।
प्रकटे परशुराम सुन सजनी, रसिकन प्राण अधार ।।
भादो कृष्णा पंचमी नीकी, शुभ नक्षत्र ग्रह वार ।
अली गोमती रस घन बरषत, जन हति परम उदार ।।

(३)

आज नभ घनन घनन गरजे ।
चपला चमकत बून्दन बरषत, उमडि घुमडि पुनि तरजे ।।
कृष्ण पक्ष भादौं बदि पाँचे, सखि शोभा मन लरजे ।
प्रकटे परशुराम रस सागर, **अली गोमती** अरजे ।।

(४)

जय जय देव देव परशुराम ।
निगमागम मथि ग्रन्थ रच्यो है, श्रीपरशुराम सागर नाम ।।
भव समुद्र के तारण कारण, जन मन पूरण काम ।
अली गोमती श्रीगुरु प्रकटे, दायक श्यामाश्याम ।।

*

श्रीआचार्य परम्परा

सम्प्रदाय युगरूप अनादी, श्रीनिम्बारक पाते हैं।
सुनो सज्जनों ! ध्यान लगा, हम उसकी गाथा गाते हैं ॥

सृष्टी के आरम्भ काल में, हंस देव अवतार लिया।
लोक रचियता ब्रह्माजी के, मानस दुख को दूर किया ॥
उनसे फिर सनकादिक प्रकटे, वेद रूप चारों भ्राता।
क्रम से फिर नारद, निम्बारक, प्रकटे सब जग के त्राता ॥
हंसावतार थे स्वयं विष्णु यह, निगमागम सब गाते हैं ॥१॥

कार्तिक शुक्ला अक्षय नवमी, हंस देव अवतार लिया।
भक्तन के हित सम्प्रदाय निज, परम ब्रह्म ने प्रकट किया ॥
हंस देव से सनकादिक को, उपदेश मिला था जिस विधि से।
एकादशवां स्कन्ध भागवत, देखो ऽध्याय त्रयोदश से ॥
श्लोक चतुर्दश में यह लीला, सर्वेश्वर की पाते हैं ॥२॥

श्रीसनकादिक मोक्ष मार्ग के, आचारज माने जावें।
दश अध्याय श्लोकषट् देखो, भगवद्गीता बतलावें ॥
श्रीसनकादिक सम्प्रदाय यह, नाम सनातन से आवे।
कार्तिक शुक्ला अक्षय नवमी, अवतार दिवस माना जावे ॥
देव ऋषी श्रीनारदजी फिर, इनसे विद्या पाते हैं ॥३॥

श्रीनारद ने देव ऋष्यों में, इसका प्रकाश जब फैलाया ।
देव ऋषी सब सम्प्रदाय तब, होय मुदित यह अपनाया ॥
मार्ग शीर्ष की शुक्ल द्वादशी, देवऋषी अवतार धरा ।
बड़े भाग्य इस तिथि के हैं जो, व्यञ्जन द्वादशी नाम पड़ा ॥
श्रीनारद के शिष्य यहाँ फिर, निम्बारक मुनि आते हैं ॥४॥

श्री वेदान्त रत्न मञ्जूषा, प्रथम श्लोक में बतलावे ।
अवतार सुदर्शन चक्रराज, श्रीनिम्बारक कहलावे ॥
वैष्णव धर्म सुरुद्रुम मञ्जरी, स्वधर्मामृत सिन्धु गावे ।
पारिजात सौरभ का भी, भूमाधिकरण यह बतलावे ॥
नाम सुदर्शन सम्प्रदाय भी, इसी से इसकां पाते हैं ॥५॥

कार्तिक शुक्ला सुतिथि पूर्णिमा, अवतार सुदर्शन ने पाया ।
देश तिलङ्ग तीर गोदा के, अरुणाश्रम को चमकाया ॥
पिता अरुणमुनि मात जयन्ती, आनन्द हुआ सब भक्तन को ।
निम्ब वृक्ष पर अर्क दिखाया, सन्यासी चतुरानन को ॥
सम्प्रदाय का नाम इसी से, निम्बारक सब गाते हैं ॥६॥

भाष्यकार श्री श्रीनिवास फिर, आचार्य पांचवें प्रकट हुए ।
पाञ्चजन्य शंखावतार ये, सकल लोक में विदित हुए ॥
माघ मास की शुक्ल पञ्चमी, घर-घर उतसव छाया है ।
भाष्यकार आचार्य चरण, जब अवतार यहां पाया है ॥
कुण्ड राधिका ललिता संगम, तपस्थली बतलाते हैं ॥७॥

छट्टे विश्वाचार्य चरण ने, दया-दृष्टि जग पर कीनी ।
ज्ञान ध्यान की शिक्षा देकर, त्रिविध ताप सब हर लीना ॥
फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी तिथि को, विश्वाचार्य अवतार लिया।
अपने पद पर आचार्य रूप, पुरुषोत्तम को प्रकट किया ॥
चैत्र शुक्ल षष्ठी को इनका, उत्सव भक्त मनाते हैं ॥८॥

पुरुषोत्तम आचार्य चरण से, श्रीविलास आचार्य हुए ।
होता है अनुमान इन्हीं के, शान्ति-कान्ति स्तव रचे हुए ॥
शुक्लपक्ष वैशाख अष्टमी, अवतार दिवस शुभ है इनका ।
श्रीस्वरूप आचार्य पाद, उपदेश किया पालन जिनका ॥
ज्येष्ठ मास शुक्ला प्रतिपद को, अवतार धार ये आते हैं ॥९॥

श्रीमाधव आचार्य भूमि पर, फिर प्रकटे जन हितकारी ।
हरि-गुरु भक्ति स्वरूप दिखाकर, त्रिविध ताप उननें टारी ॥
आषाढ शुक्ल तिथि दशमी को, श्रीमाधव अवतार लिया ।
श्रीबलभद्राचार्य शिष्य फिर, निजपद पर आरूढ किया ॥
श्रावण शुक्ला तीज महोत्सव, उनका भक्त मनाते हैं ॥१०॥

उनके पद्माचार्य भये फिर, आचार्य लोक में बड़भागी ।
भादों शुक्ल द्वादशी शुभ दिन, अवतार धरा हरि अनुरागी ॥
फिर श्यामाचार्य जगद्गुरु, भये त्रयोदश गणना में ।
त्रयोदशी तिथि आश्विन शुक्ला, उत्साह बढा जनता में ॥
श्रीगोपालाचार्य यहां फिर, सिंहासन पर आते हैं ॥११॥

एकादशी भाद्रपद शुक्ला, शुभ दिन को अवतार लिया ।
कृपा करी श्री कृपाचार्य पर, निज पद पर आरूढ किया ॥
इनने अगहन शुक्ल पूर्णिमा, अवतार दिवस निज अपनाया ।
फिर श्री देवाचार्य लोक में, पूर्ण प्रतापी प्रकटाया ॥
ब्रह्मसूत्र सिद्धान्त जान्हवी, जग में जो प्रकटाते हैं ॥१२॥

माघ मास की शुक्ल पञ्चमी, लै आये अवतार मही ।
राज सभा कशमीर बतावै, देवों के आचार्य यही ॥
ये द्वादश आचार्य यहां से, भट पदवी अब चलती है ।
सुन्दर भट्टाचार्य नाम से, परम्परा जो मिलती है ॥
इनका अगहन शुक्ल तीज को, उत्सव भक्त मनाते हैं ॥१३॥

देवाचार्य के शिष्य दूसरे, श्री व्रजभूषण देव भये ।
जिस शाखा में रसिक शिरोमणि, स्वामी श्रीहरिदास भये ॥
वृन्दावन अरु नैमिसार में, इस शाखा के स्थान बने ।
जय देवादिक भये कवीश्वर, इस शाखा में रत्न घने ॥
बैजू तानसेन से गायक, शिक्षा इनसे पाते हैं ॥१४॥

श्री स्वामी हरिदास प्रकट की, ब्रज में प्रेम रसिकता को ।
निधिवन और विहारी बांके, वृन्दावन की प्रभुता को ॥
लेकर निधि निम्बार्क क्षेत्र से, सम्प्रदाय जो छोड़ रहे ।
होगी उनकी वही दशा ज्यौं, पत्ते तरुवर छोड़ गये ॥
हंस कबीर प्रणामी आदिक, भेद अनेक दिखाते हैं ॥१५॥

सुन्दर भट्टाचार्य दियो निज, पद्मनाभ को सिंहासन ।
कृष्ण पक्ष बैशाख तीज को, जिनका आता उच्छव दिन ॥
श्री उपेन्द्र प्रकट भये फिर, भक्तिभाव रस सने हुये ।
चैत्र मास की कृष्ण चतुर्थी, भक्तन के मन मोद भये ॥
प्रतिवादी उल्लूक छिपे जब, वैदिक सूर्य दिखाते हैं ॥१६॥

मर्यादा पुरुषोत्तम सम फिर, रामचन्द्रभट प्रकटे हैं ।
कृष्ण पक्ष बैशाख पञ्चमी, घर घर उत्सव करते हैं ॥
वामन भट्टाचार्य भये फिर, वलि जैसों के हेतु यहां ।
ज्येष्ठ मास कृष्णा षष्ठी दिन, उत्सव होते जहां तहां ॥
धर धर अवतार स्वयं हरि, आचार्य रूप से आते हैं ॥१७॥

कृष्णभट्ट आचार्य भये फिर, नव खण्डों के सुखकारी ।
कृष्ण पक्ष आषाढ मास की, नवमी को भव भय हारी ॥
श्रीपद्माकर भट्ट भये फिर, इस भू पर आचार्य बड़े ।
कृष्ण पक्ष आषाढ अष्टमी, कर जोड़े नृप द्वार खड़े ॥
खिला कमल सम धर्म सनातन, उज्ज्वल यश सब गाते हैं॥१८

श्रवण भट्ट आचार्य अवतरे, कार्तिक कृष्णा नवमी को ।
भूरि भट्ट आचार्य भये फिर, आश्विन कृष्णा दशमी को ॥
एकादशी कृष्ण कार्तिक की, माधव भट्टाचार्य हुए ।
कृष्ण द्वादशी चैत्र मास में, श्याम भट्ट आचार्य भये ॥
एकादशी पौष कृष्णा को, गोपाल भट्ट दरसाते हैं ॥१६॥

वलभद्रभट्ट आचार्य भये फिर, माघ कृष्ण तिथि चौदस को ।
गोपीनाथ भट्टजू प्रकटे, श्रावण शुक्ला सातें को ॥
चैत्र शुक्ल प्रतिपद शुभ दिन में, केशव भट्टाचार्य हुए ।
चैत्र कृष्ण दुतिया गादी पर, गांगल भट्टाचार्य भये ॥
रचे सभी ने ग्रन्थ बहुत से, यवन लुप्त कर जाते हैं ॥२०॥

दुराचार अति जोरों पर था, यवनों का भारत में जब ।
श्री केशव काश्मीर भट्टजी, अवतार लिया भू पर तब ॥
तीन बार दिग्विजय किया था, नास्तिक मत के हरने को ।
इससे विश्व विदित दिग्विजयी, कहते हैं सब ही इनको ॥
वेदान्तकौस्तुभ-सरस भाष्य पर, प्रभावृत्ति चर्चाते हैं ॥२१॥

मथुरा में विश्रान्त द्वार पर, वान्धि यन्त्र यवनों ने जब ।
हिन्दू धर्म मिटाना चाहा, लगे तड़फने हिन्दू सब ॥
तब इनने यवनों को अद्भुत, खेल दिखाया था कैसे ।
होने लगे यवन सब औरत, हिन्दू जैसे के तैसे ॥
यवन हिन्दु मिल पड़े चरण में, अपराध क्षमा करवाते हैं ॥२२॥

काश्मीर में अधिक वास से, काश्मीर की छाप जड़ी ।
भारत का उद्धार करन से, कहें भारती धाक जमी ॥
अल्लाउदीन यवन खिलजी, को शासन बतलाते हैं ।
वही समय इनका भी जानों, योग निपुण कहलाते हैं ॥
रहे तीनसो वर्ष धरा पर, यह प्रमाण हम पाते हैं ॥२३॥

करी तपस्या और जहां पर, अन्तर्धान हुई लीला ।
मथुराजी में स्थान बना वह, जमुना तट नारद टीला ॥
मन्दिर केशव देव बनाया, इनका ही बतलाते हैं ।
ध्रुव टीलादि पुराने सब कुछ, इनके ही कहलाते हैं ॥
गोवर्धन हरि देव आदि सब, प्रतिमा ये प्रकटाते हैं ॥२४॥

आचार्य तीस तैलंग विप्र थे, श्रीनिम्बारक से लेकर ।
श्रीभटजी आरूढ भये फिर, गौड़ विप्र सिंहासन पर ॥
जन्मभूमि मथुराजी इनकी, नारद टीला बतलाई ।
तेरहसो बावन विक्रम में, युगल शतक रचना पाई ॥
आश्विन शुक्ल द्वितीया इनका, उत्सव भक्त मनाते हैं ॥२५॥

श्रीहरिव्यास देव आचारज, भये प्रतापी फिर भू पर ।
द्वादश द्वारे चले इन्हीं से, प्रमुख शिष्य नामावलि पर ॥
शिष्य हजारों साधु सन्त ले, भ्रमण किया सब भारत में ।
देवी को भी दीक्षा दीनी, यश छायो तिहु लोकन में ॥
कार्तिक कृष्णा द्वादशी तिथि को, उत्सव भक्त मनाते हैं ॥२६॥

श्रीभटजी के शिष्य दूसरे, वीरम त्यागी सन्त बने ।
कोटा, टाटा नगर आदि में, इस शाखा के स्थान घने ॥
प्रमुख शिष्य हरिव्यास देव के, स्वभू वोहित उद्धव देव ।
मदन गोपाल वाहु वल, परशुराम और गोपाल देव ॥
ऋषिकेश माधव अरु केशव, लपर मुकुन्द कहाते हैं ॥२७॥

सिंहासन हरिव्यास देव का, परशुराम ने ही पाया ।
गौड़वंश कुल कमल दिवाकर, ठीकरियाँ तन प्रकटाया ॥
पन्द्रह सो पन्द्रह विक्रम में, जमुना तट से आकर के ।
तांत्रिक यवन फकीर पराजित, कीन्हें फूंक उडा कर के ॥
पाटोत्सव का दिवस भाद्रपद, कृष्ण पञ्चमी गाते हैं ॥२८॥

फिर हरिवंशदेव व आचारज, देशिक वपु को धरते हैं ।
मार्गशीर्ष की कृष्ण पञ्चमी, उत्सव बाजे बजते हैं ॥
श्रीनारायण देव भये फिर, भूपति जिनके द्वार रहैं ।
पौष शुक्ल नवमी उत्सवदिन, दरशन करि सुख शान्ति लहैं ॥
श्रीवृन्दावन देव महाप्रभु, आचार्य रूप में आते हैं ॥२९॥

आमेर उदयपुर जोधपुरेश्वर, आदि सभी नृप भारत के ।
लालायित निशि दिन रहते थे, जिनके दरशन पाने के ॥
नृप महिला भी जिनकी शिष्या, भई अनेकों कवि विदुषी ।
वांकावति, सुन्दर छत्र कुमरि, शरणागत महिमा दरशी ॥
श्री जयसिंह नृपादिक जिनके, स्तोत्रों से गुण गाते हैं ॥३०॥

उनकी ही आज्ञा पाकर के, आमेराधिप यज्ञ किया ।
जयपुर जैसा शहर बसाकर, सकल विश्व में नाम किया ॥
कृष्ण पञ्चमी माघ मास बुध, सत्रह सो चौरासी में ।
जयपुर शहर की नींव लगाई, वृन्दावन प्रभु सन्निधि में ॥
आमेर निकट श्रीपरशुराम के, द्वारे बास कराते हैं ॥३१॥

कृष्ण पक्ष भादों त्रयोदशी, सुन्दर दिन पाटोत्सव का ।
चरित बहुत विस्तार पूर्ण हैं, श्रीवृन्दावन प्रभुजी का ॥
फिर श्रीगोविन्द देव विराजे, श्रीजी के सिंहासन पर ।
कार्तिक कृष्ण पञ्चमी उत्सव, मुद मंगल होते घर घर ॥
अभिनव भाषा पद रच रच कर, प्रभु को सहज रिझाते हैं॥३२॥

फिर श्री गोविन्दशरण देवजू, कृष्ण अष्टमी कार्तिक में ।
वेदचन्द्र वसुइन्द्र(१८१४)अब्द शुभ, प्रकट भये जगतीतल में
ख्यात किया श्रीजी के पद को, स्थान सुजस सुन्दर भारी ।
श्रीसर्वेश्वर भाव बढाया, राधामाधव छवि प्यारी ॥
श्रीसर्वेश्वर शरण देव फिर, पौष कृष्ण छट आते हैं ॥३३॥

श्रीनिम्बार्क शरण देवजू, ज्येष्ठ पञ्चमी शुक्ला को ।
इसी दिवस व्रजराज शरणजू, आसुख दीन्हों जनता को ॥
श्रीगोपीश्वर शरण देवजू, अद्भुत त्याग दिखाया था ।
सम्पति लाख करोड़ों की तजि, वैष्णव धर्म निभाया था ॥
जयपुर आदि नरेशन को ये, निज प्रभाव दरसाते हैं ॥३४॥

है इतिहास प्रसिद्ध जगत में, धार्मिक रण तिलकों वाला ।
वख्शीराम व्यास कर लीना, निजकर से निजमुख काला ॥
महाराज श्रीरामसिंह भी, पछताये पछ ले करके ।
यश धर्म विभूति ठगा बैठे, भाल विभूति लगा करके ॥
यही दशा होती उनकी जो, अनुचित हट अपनाते हैं ॥३५॥

यह जयपुर का खेल करावे, इतिहास पुराना याद हमें ।
गुप्तसेन भूपों के द्वारा, भेंट हुए मन्दिर कितने ॥
पर स्वतन्त्र आचार्य भावना, अपनी बदल न सकते थे ।
धार गले यों श्रीसर्वेश्वर, मठ सम्पति तजि देते थे ॥
जो छोड़ निज धर्म छोड़ते, उसको ये भी आते हैं ॥३६॥

ऐसे त्यागी सम्प्रदाय में, और सन्त भी घने हुए ।
जिनके नाम प्रसिद्ध आज भी, मठ विशाल हैं बने हुए ॥
श्रीस्वामी हरिदास और श्री,-नागाजी जगहित कारी ।
श्री गिरिधारी शरण अभी थे, वृन्दावन में ब्रह्मचारी ॥
श्रीश्रीनाथ विहारी वांके, निधिवन आदि बताते है ॥३७॥

कितने इतर सम्प्रदा वाले, अपनी छाप जमाने को ।
सेवक और शिष्य भी बनकर, लेते जाते सेवा को ॥
बनते जाते हैं स्वतन्त्र फिर, सम्प्रदाय को तज करके ।
कहें सदासे हमही अधिपति, इस मन्दिर अरु ठाकुर के ॥
इसी हेतु से सम्प्रदाय में, मठ विशाल कम पाते हैं ॥३८॥

श्रीघनश्याम शरण फिर प्रकटे, आश्विन कृष्णा षष्ठी को ।
आचार्य पीठ वैभव अभिनव, सत्पथ के दिखलाने को ॥
प्रगटे फिर आचार्य चरण, श्रीबाल कृष्णदेवाचारज ।
चैत कृष्ण शुभ त्रयोदशी दिन, पाटोत्सव होवे कारज ॥
करुणा शांति सुशील गुणों में, अग्रेसर कहलाते हैं ॥३९॥

वर्तमान आचार्य चरण की, महिमा को मैं क्या गाऊं ।
सूरजसम परकाश होरहा, फिर दीपक क्या दिखलाऊं ॥
उदय होत ही तिमिर नशाया, छाया था जो वरसों से ।
भूले भटके भक्त आय कर, लगे चरण फिर हरसों से ॥
सुन्दर दरशन पाय पाय जन, मनहीं मन हरषाते हैं ॥४०॥
रुपमाधुरी देखि नयन हों, तृप्त श्रवण सुन वानी को ।
होंय मुदितमन प्राप्त हुआ ज्यों, पद-रज राधारानी को ॥
ग्रीष्म ऋतु को ताप शान्त ज्यों, बिन वर्षाके होय नहीं ।
त्यों भवताप तप्त प्राणिनको, गुरुदर्शन बिनु शांति नहीं ॥
इसी हेतु से ज्येष्ठ शुक्ल, आचार्य दूज अपनाते हैं ॥४१॥
श्रीविश्वेश्वर वियोगी बाबा, श्रीनरहरि अधिकारी हैं ।
वृन्दावन में श्री ब्रजवल्लभ,-शरण निपुण अधिकारी हैं ॥
मन्दिर दुर्ग समान बना है, तीर्थ-निम्बारक अघहारी ।
जन्म अष्टमी मेला लगता, देखें जग के नरनारी ॥
रोगी दीन मुफ्त औषधियाँ, औषध गृह से पाते हैं ॥४२॥
विद्यालय में दूर दूर से, विद्या पढने आवें ।
स्वामीजी के हवन कुण्ड पर, सदावृत्त अतिथि पावें ॥
गौशाला है गज रथ शाला, बाग मनोहर हैं सुन्दर ।
श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ यह, भारत का नामी मन्दिर ॥
दाधीच इसी से दर्शन को, सब जगके जन आते हैं ॥४३॥

* इति श्री आचार्य परम्परा लावनी समाप्तम् *

रचयिता--पं० श्रीदुर्गाप्रसाद दाधीच
रिड़ (नागौर) राजस्थान

श्रीपरशुरामदेवाचार्यचरणाश्रित श्रीतत्त्ववेत्ताचार्य--

विरचित--

❋ आचार्य--वन्दना ❋

नमः कृष्णाय हंसाय निम्बार्कायानिरुद्धतः ।
आचार्याय चतुर्व्यूहपरम्पराप्रवर्तिने ॥१॥
निम्बादित्यस्वरूपाय हरिव्याससस्वरूपिणे ।
श्रीमत्परशुदेवाय नमस्ते परमात्मने ॥२॥
वृन्दावननिवासाय नमः षोडशनामिने ।
नित्याय सत्यरूपाय भक्तभूपाय ते नमः ॥३॥
वेदवेदान्तपाराय ताराय युग्मरूपिणे ।
श्रीमत्परशुदेवाय गुरवे विभवे नमः ॥४॥
अनन्ताय नमस्तुभ्यं परमानन्ददायिने ।
श्रीमत्परशुदेवाय सर्वाचार्यस्वरूपिणे ॥५॥
नमः कुमाररूपाय देवर्षिरूपिणे नमः ।
पार्षदाय नमस्तस्मै योगेशाय नमो नमः ॥६॥
षट्श्लोकीमिमां दिव्यां यः पठेत्साधुसत्तमः ।
तस्य वृन्दावने वासो भवत्यत्र न संशयः ॥७॥

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज

की

* आरती *

ॐ जय परशुराम स्वामी ।

श्रीगुरुदेव दयानिधि हो अन्तर्यामी ॥

ब्रह्मपुष्करारण्य में साभ्रमती तीरा ।

श्रीनिम्बारक तीरथ निर्मल अति नीरा ॥

परशुराम तपस्थली धूनी और नाला ।

सन्मुख युगल खड़ाऊ और वृहद् माला ॥

भादव कृष्ण पंचमी पाटोत्सव भारी ।

ध्वजा, बधाई-पूजन दर्शन शुभकारी ॥

मनः कामना लेकर दर्शन को आते ।

पुत्र पौत्र, धन सम्पति, मनवांछित पाते ॥

श्रीगुरुदेव कृपालो ! कृपा यही कीजे ।

दास जान कर अपनी चरण शरण दीजे ॥

राजस्थान मही पर यह उपकार किया ।

आचार्यपीठ कर स्थापना, भगति प्रचार किया ॥

प्रेम सहित यह आरती, जो जन नित गावे ।

सन्त सदा वह निश्चय, मनवांछित पावे ॥